



पैसपोन : 1988

विद्यार्थी संस्करएा

मोल क्र**ाव्य**

पक्की जिल्द मोल: 20.00

्मुदक : दी यूनाईटेड प्रिन्टर्स, तः राघादामोदर की गती, घौड़ा शस्ता, र-302003

घादरजोग दादोभाई भैरोंसिंह जी नै घर्ए मान सू'।



पात्र

रंगू मायर मागू मावत मदन गिरवर सरूप पिरथी हरएमान् भादर

पैलो दरसाव

[कोटड़ी रैसामै ग्रामली रो गट्टो। ऊपड-खावड़ भाटां रो चबूतरो। बोल-बतलावण री खास जगां। दिनूगे सूं लेय'र सिझ्या ताई हथायां री ठा^{दी} ठौड़। गट्टै रै सारै ई गैलो, जको रात-दिन बगतो रैंबै। रामा-स्यामा री ^इहैन प्हैल ग्रर गांव में बखत काटण री चोखी जगां। टावर सूं लेय'र बढ़ां ताई रो भाणू-जाणू। गर्टु री बातां री नुवी छाप घर छोटी-मोटी बाता रो सांतरो केन्द्र । सुवै रो बगत । सायर गर्टुमायै बैठ्यो वीड़ी पीवै । दरवार्ज कांनी ^{पू} टोकणी हाथ में क्षेय'र ग्रावती रंग।

रंगू : (इचरज ग्रर हरख सूं) ओ हो, सायर जी बैठ्या है के ?

(वणावटी हंसी रै सुर मे) आव भाई रंग्। सायर:

सवारी कद पूर्गी? रंग्र :

सायर: वस ग्रावता ई हा।

रंग: बाकी कांई हालचाल है ?

सायर: हाल तो की माडाई समको।

रंगु: कीकर?

बस पृष्ट मत । मील री मीकरी खोटी घणी । फोड़ा मुगतां हां ।

सायर:

रंगू : किया ? (बंडल मूं बीड़ी काउ'र देवें घर रंगू उभ रै बगल में बैठ'र बीडी सायर: सिलगा लेव) भाइड़ा मील बंद पड़ी है। सेटां रो की विगर्ड नी। बी

तो समदर है का नी कद मूली। ग्रठ तो घरा माटी रा चुला है। बात तो माची है। कमाया विना किया पार पड़ी।

रंग : थारै मौब है, भाइडा टोकणी लेप'र कोई रै बारली जावे तो झानती शायर: थोहो-भोन माटा पालै ई ।

क्षेर, हाल तो सोगा र सरम है पण की मजेदारी कोनी। पर्छ म्हारना रंगु: छोरां रेभी मा जर्थ कोनी। व केंद्र, बाहुनी है नी ओ मगतीपण्। मात्र भारा देटा कमार्वे सर से गांव में टोक्सी फीरो, मा बात बोसी नी सागै।

सायर: भारता, चोर्या-दूरी कुल देखे है, सद पीस्या भारत री होड हुवै कांई? छोरा ईंटोक्यों सू ईंदब राख्या है नीतर देख स्हारला कंबर सांच री टेढ़। मालो कमार्व कोनी छोक पोसी घर ऊट-सुवार गोदम मचार्व।

रंगु: सैर, म्हनै तो ठा है।

सायर: नेरे मूं बे छानी है। तू तो घर-घर जावे है।

रगू: (चोडो ठूर'र) बो निस्मो तो थे मुख्यो होसी रै

सायर: कुणमा ?

रगू: बजरंगर्नपीट्यीजवी।

सायर : हा, में तो धीसदाबाद में गुण्यों हो । पण करा काई ? भाइडा, गृस्सों तो इस्यों सायों क बदुक काटद्यू, पण सालों बस कोती चार्ल ।

इस्या भ्राया के बदूक कादद्यू, पण सीला बस काना चाल । रंगू: चैर, बजरंग गो तो ई मे की दोस नी हो।

सायर: म्हें कद बनावा। म्हारो बेटो नालायक घर निकास है तो स्हने मानणू पढ़मी, ई में बेजा काई है ? अें तो साला पीडवा के पर लगा दिया।

रंगू: मायर जी, विधा दोस पारा टाबर रोई मी है। ई माव रोई बरण विगड़मो। दारु, मार-पीट, गुडागरदी प्रर बदमानी—ई गांव मे और रेखा।

सायर: ग्रर्दे भा बार ई तो पाटियं उतार दिया । दारु ग्र्हे भी पी ई, पण इस्या कुलभंतर वण्या कोनी ।

रंगु: ग्रंब तो काई पूछो हो, सत्या ई निकलगी।

सायर: भाइड्रा, कर कार्य, शुन्न रो पूट पीणो पड़े हैं। नी कोई रो काण-कायदों धरनी कोई री सरम-बाज।

रेंगू: ग्रोहो, कायदारी तो बात छोड़ो । मुदवा कैवा तो चोटी में बटको स्रो भरें हैं। पर करल्यां काई ? दिनारै घक्को देवा हा।

[रंगूबीड़ी बुभावें घर टोकणी सेव'र जावण साकस्यार हुवै जद मांगू हाय में टेस सेव'र पब्तरा कानी आर्थ। टेप री घावाज मुर्वार दोव्यू जगां मागू कानी देखवा साग ज्यादै अर मांगू वेड्रै धावतै ईटेप री घावाज की धीधी कर लेवें।]

सायर: ग्री हो, आवो सरकार।

रंगू: (देख'र हती)

मोंगू: धजी सरकार तो धायोड़ी ई है, ये सुणाबो, इया धवाणचुकै कठै मूं टपन्या? काई हुवै ग्रर काई नी हुवै, थानै तो मतलव नी। ग्रावी अर वर

भाइड़ा कैवै तो सांची है, सुधार अै लोग ईकर सके हैं। ग्रा^{पा ह}

भाइड़ा, खाली कैवर्एं सूंतो काम हुकै नी। कैवो अर उण^{है हा}

थे म्हारो मतलब नी समझ्या। श्राप आलो समर्भ बोई सुधार क

सके, पण जके नै सुधारा दो उण नै आप झालो तो समर्फे। बाध्या

वात-ब्रात की नी । भाई गांवरी चरचा। दारु, मरपीट म

थे लोग योड़ा परम्परावादी हो। हाल वी गांव नै अठारवी सर्दी

मांय देखण चावो । दारू, मार-पीट घर बदमासी-ध तो ग्राज

थे मां चीज्यां नै माठारवी सदी सूं जोड़ो, जद थाने ग्रचम्मो हुवै,

मां नै माज रै जमाने मूं जोड़'र देखू तो म्हनै अवरज नी हवे ! (जावण लागे) त्यों जणा तो गई भैम पाणी में।

[मांगू घ्रालयी-पालयी मा'र गट्टै मार्थ बैठ ज्यावै । टेप वन्द कर'र ग्रा सामें मेल्ह लेवें 1]

खैर, अब चालस्यां (उठण लागै)।

(हाथ पकड़ र बैठा लेवै) इंया किया, म्हें आया ग्रर थे चाल्या। थोड

बैठ वो रंगु। वैठ्याकाम कोनी चालैं। थे तो पढ ल्खि'र मौज करो हो, गांद रैं क रंगू :

मजदूर श्रादमी हां। नी आगै री जाणां तो नी पाछै री।

मुघार तो करां पण चावै कुण है ?

म्है तो सांची कैय रैयो हैं।

खटो, जद की हुवै।

कीं रैपड़ां।

बदमासी ।

कांई ?

धरम मानी जावै।

भो ई तो फरक है।

(ब्यंग में) सांची भी कतीक।

चावै तो कुण कोनी, आ बात तो मत कैवो ।

(मजाक में) बाध्यां पड़्या तो सुधार किया हवे ?

विया थे किण बात नै लेय'र चरचा कर रैया हो।

बाह भाई तूभी पड लिख'र मा बात कैंदै ?

जावो ।

सायर :

मांग :

रंगू:

मांगू :

सायर:

मांगु:

रंग :

मांगू:

मांगु:

रंगू :

मांगू:

सायर:

मांगू:

.रंगू:

सायर:

रंगू :

सामर: (हाय पक्षत्र'न मामे) धन भाइता मृद्य, धर पङ्या-लिल्या रो बात गण । सारा तो पूछ पक्षत्र'र मातवाला हा ।

रमू: थण मन्त्री बनावो, पूछ पक्टार हुवे में तो कोनी पट्या। जर औ पड्या-निरुपा बनिस्टरः वैवलद्या, क्ट्रास्टर कर्य हो बाद मुणश मात्रो हो।

मांगू: (हम'र) हा : हा यैवै नै।

रंगू: महर्ने अब देशे होय रेगी है मीतर दो उबाब मुणातो।

[रंग टोरणी धापरै कार्य मार्थ मेन्ट्र मनकतो जारण लागै ।]

मीगुः (तेत्र भाषात्र मू) अर्थे ठेर रगु (अर एवं बोर-बोर सुहमण सामो ।) सामरः (थोर्ड भोरत सू) जावण देवण राता मार्च बुपूटी है आहता । टोरुणी जिल्लाह ।

भौगः धनी नार्द्धने टीकणी । ई नै सकब माणी ।

सायर: सायर्गी भी भी बीई लड़ब हुएँ बाई र

भिष् । स्थान । वा वा प्रतिकृति । भिष् हें दिया नोती । ये से बाद वादेन से बेट्बा हा, सैणन-स्त्री सू पाटो-पाटो कर गिरा हा। भागना-भागना पेट नो भरे। सर रह छटे हैं पार्ट-पार्ट कमायोडा सूभीत करें हैं। ई नै नाई टा पान वाड भाग दिये ने ?

सायर: हा, मा बान तो माची है। आ तो अठ ई कोगा नै बादना दशार्थ अर मरेन उटार्थ।

मीगृ: आर्दतो देवर्गीरी बात है। ई घर नी भीत बी घर में अर थी घर री माचिस ई घर में। ईंदै हाई बाप रो आय ह।

सायर: टीक हेबर्सी में बो भी बायों पट भरे हैं। कोई माई नटै ब्रर कोई मार्द पर्ट । ई नै तो पूरों गुख ई सुट ।

मींगू: (हंस'र) रहे लेंद, ई'रे मानमें मार्थ धैतराज नी उठायू। पण अनार माप जर्की मुखार घाटी बात माभी रागी, उस सिलमिलें में धैडा शीमा री ममिता अने गाम मासनो रागी।

सायर: आ किया?

भागू: रगहो तो ओई ई। नीव राभाटा काडणियां तो घैटा हो लोग हैं। हाल आगा ने घोटा नी के निमाणू सगाणू वर्ट हे बर घारा बदुक रै

योभ मूं नार्थ नै पीच रात्यों है। सायन: (भोड़ों ठर्रर) मुचार तो भादका मार्ग जैना विशेषारी सोग ईकर सकें है। मर्दें मागणी जान री नार्ट विमान ने, काम में रोडों सटकारें।

भाग (थांडो भूभळार) थे हाल म्हारी भागनी बात ने पिछाणी नी। म्हे थांच में आ बात भी क्ये देवुंक डिबीजारी लोगा रो स्थार सुंकीई

लेय'र मैं किणी रैं सामै जाय'र सड्या हुय मकै। भिसारी धारों ^हे दिखार्व तो पद्यो-लिन्यो म्नापरी हिथी दिखार्व । मर पर्छ भी भावरी नी'के डिग्री रो सनमान ई हुवै। डिग्री भी होली जलावनां, डिग्री ^{नै पृ}र्वी करता घर डिग्री नै फाडता— म्हे घणा जणां देग्यां है।

पर्छ भी भाइडा पढ्या-लिस्या भी कीमन तो है वो म्हारली तरियां ^{मीन} रैमाय स्रोटा तो नी मुगतै। सायर :

देखो दोय चीज ह-पढण नियण ग्रर मुघार करण । पड्या-तिहरी मांग : घणां है तो मुघार गै मोचिणिया कम हैं। पर्छ मुघार की रो—स्^{द्री,} परिवार रो या ममाज रो ? ग्रर मुधार भी कद, जद मुधार री जहल मैसूस हवे ग्रर जरूरत मैसूस हवण लारै की ग्राधार हुवे।

खैर, भ्रौ तो ज्ञान री बातां है या पढ्या-लिख्या लोगों री हैं। महितों में सायर : जमानो देख्यो जद डांग खुंब मार्थ ई रैबती पण ग्रव तो कुतां नै भगावन सारू ई डांगड़ी नी। कांई जमानो धायो या ठीक आयो, म्है तो ^{की नी}

कैय सकू। हा, गोदम-घाड़ घर मारा-पीटी ग्रैडी पैलांनी सुणी। स्यात जमान री रपतार में अड़ी वाता रो ग्रचम्भो तो नी होव^न मांगू: चाइजे । थचम्भो । भाइड़ा तूभी काई बळनी में पूलो देवे है वेटो बाप नै, बा सायर :

धरमानै मानी मानै, इण मूंबड़ी बात काई हुय सर्क है। रा^{ब हो} कोटड़ी घर गांव-ग्रं तो पर्छ री वात है। म्हारल कवरमाव रा किरतः तू सुण्या होसी, तेरैं मूं कांई छानी है। म्हारै कनै सो रोज-रोज रा कुखा पूगता। पण करा काई? करम रा भोग।

थे स्यात भादर वास्तै कैवता लाग्या। मांग: (जोर देय'र) हां, मादर भी कांई वहादुरसिंग। वो तो गांव में ^{ग्रं}ई। सायर :

धमासाण मचा राख्यो है के पूरै गाव रै नाथ घाल राखी है। थे चाये म्हारी बात मानो मत, पण ग्राज जमानो ग्रेडा ई लोगां रो है। मांगु: जमानो तो और महै भी देख्यो है—गैलै आवण अर गैलै जावण । ह सायर : देख, रामप्यारी आंली जमीन मार्थ जबरन वब्जो कर लियो, बन्नर्ग

त्राप र टावर-टीकरां नै लेवण खातर अमदाबाद सू आयो हो ग्रर ज^ई दिन जावण री त्यारी कर रैयो हो, उण दिन वी रो सिर फोड़ दि^{यो}, लारला दिनां दाघा नै मेंस्जी कर्ने ठोक्यो ई हो, स्टैण्ड पर गिरवारी सेठ र ढपूस मार्**या ई हा, मूरजी पिरोत मू**ं हायापाई करी ई ही, हरि^{दा} वाण्या'क साथ देवा-लेई हुई ही—सो कोई घेक किस्सो है। मांगू (जीन में बा'र) भी तो भादर हैं भादर।

मांगु: तो जणा थे भादर राकिस्सा सूज'र आया काई ?

सायर: ना । महारै तो भील बद हयगी नीतर घठै आवतो ई वयं ?

मांगु: भावण 'तो चाये, सेबट आ जलमभोम है।

नायर: जनमभोम है बर बर्ट बैडा किरनव हवे, जणा ई द य है नीतर गुंडा-गर्दी घर धटमामी करें बोनी ?

मायर धापरी जेब मुध्येक बीडी धर माविस काढ'र बोडी सिलगावै। रमाल बाध्या, ऊपर में दही री तावणी मेन्हा धर हाथ मे लाठी लिया मावन ग भावण् । धार्गआर्यभैन ग्ररलारै टिचकारी देवतो सावतः। सायर भरमागुनै गर्ट मार्थ बाना करना देख'र धोडी नाल मूणनो रैवो धर फैरू बीच में बोलग सार्गा)

सावत : (मब्राक्र रैसुर मे) ग्राब कडैरा परच्या बाचो हो दोन्यू जणा।

सापर: (बी.भी देवनो) घर आव सावन भाषा, ने घेक फुक मार ते । स्टार्न भी ठा है त क्षेत्र में मौजा मार्रह। हाथ में लाठी अर पार्ट दाल वाटी।

सांवन : (हमण लाग ज्यावी) महै जी थे तो सदा मुई मजाक करी टाकरा । पुर

तो धणी ई मिलावां हो, पण तक बैठ कोनी । मायर: जाणग्यो भाइडा, मावन । (हमण लागै)।

मादन : (हमनो मा) माग रिया माग्योडी मु डो लिया बैठयो है थो तो पड़ेमरी है

वी अ. गाम। माग : (योडी मनक'र) मह मोची हो, देखा मावन री बाणी मुणा।

मादन : बाणी तो सता री हवे, महारे बस्ते तो मधीह है मडीह ।

मांगु:

धारा नो गटीह भी बोला लागे है।

मावन : भा बात भी न ई वैदे हैं नीतर भाषा सोय महनै नो 'वहै-वहै'' वैदे ।

मागू : मो तो दुनिया में दूररो है सावन । धार्म बन्ने सरी-क्यी बाना है। जणामे निटास कम अरु शरास घण है। ब्राज रै मिनला री पाचन मंगती प्रती क्ष्मजोर है'क दो यारी सभी सभी बाता नै पचाद सी सहे।

उग न पारी बात घटपटी अर बेत्री सागै।

मिथिर: साम् टीव केंबे हैं मावन । बारा जैंडा मीच नता वे हैं। आज नो महती हुनिया सन्तो-चोवडी मे राशे है। भटी गुम्टी भरे है बर लगी बैदन र्दे मापत पर है। सरी तो बो बंदे तका रे हो निर हुई।

साहन: धर-धर मालका धनी बेजा मन कैंबो। रहारी नी मुसाव कानगरनी है। सरी चेक पटी सडार्वनी । स्टेभी आण् है, पर्णकर काई भारा, मार्था बह्या माळ उटे।

Wid fang ba

सायन . (हम'र) मो मो आप-नाप से निजरियों है। महै तो गांधी बाग पत हामोटी मीत मार्थ माता हा । मोटो मायण घर मोटो पैरण् हमेस साच भैवण् । मान् . धा थात्र भी थे इंगीबो हो, नी क्याज तो मुख गांधी बाबानी हुई ह

वृत्त धापर नेम-धरम मुख्य जिंदगी जीवें। प्रचरत तो ग्रोंक गोंगी नै तो गापीत्री राचेता ई भाइया है। सायर: भाटटा बाज गांधी जी रो काई उठाय उठे। लोग बापरै सुवारणारे हुव रैया है। गांधी जी तो बावडा नगवीरा में टगरमा है।

सांबत : अरुभाषा, म्हें तसबीर री बात नी करूं। म्हें तो सुद गांबी बी^{र्} कोनी देख्या, पण गायी जी से मनलव उणां रै मिद्धान्तां सूं है पर मूर्त लागे भी गिद्धान्त चोसा है भर महें उणा नै निभा सकू हूँ। मांग : मा मोली बात है पण माबत थारा सिद्धान्त थारे ताई है। हो है

जावण्, मेंस्यां चरावण् ग्रर रस्मी बंटण — श्रो ई पारो नाम है। जे दुनियादारी रो लक्ष्मी नागै तो ठा पड़े के सिद्धान्तां मार्थ ठैर^ल कतो मुद्दिकल है।

सायर : प्ररे, श्राज कुण है जको सिद्धान्तां साथै चालै घर मा भी सां^{ची है} मिद्धान्तां मार्थे चाल्या सिद्धान्त ई चाले, काम तो चाले कोनी।

सांवत : (मैंन कानी देरयों "भैंस घणी दूर चली गई) ले भाया, अब तो बा^त भैस कठीने ने चली जांय (सांवत तेज चाल मूं झागै जावण लागै)। मांग् : यम कोई। (सावत रै लारै देखतो सो) महैं तो खद मा कैय रैया है सिद्धान्तां मार्थे टिकण् दोरो है। कोई नै भापरी मेस री चिन्ता है वे कोई नै ब्रावरी टावरी री। सिद्धान्तां नै कठै ताई वाटै ? सायर:

म्हें भी धाई मानूं। बात करण्ं सोरो धर बात माफिक चात्रै दोरो । गांधी जी री छाप लगा'र बड़ो आदमी बण्या रो जमानो गर्बी। हाँ, उण री ओट में, से धाप-धाप रा सिट्टा सेने हैं । महै तो खुद गुन^{हा} में रेवू हूं — गांधी जी री जलमभीम में। धोली टोपी आला रा के म्हारे मूं काई छाना है। मांगु: (थोड़ो ठर'र) चलो, ग्रा भी मजैदार बात रैयी । (प्रसंग नै बदलता वहीं)

तो भादर री खबर थारै ताई भी पूगगी कांई !

सायर: (उबासी लेवतो) खबर तो माय ज्याय है। प्रमायाय भी गांव रो मेक मार्वे भर मेक आवे है। पर्छे मारपीट भर हुद्दगवाजी री लबर तो हवाई जहाज मूंभी पैसी पूर्ण हैं।

मांग : (कान सगाय'र सर्ग) स्थात म्हनै कोई हेलो दियो दीखें।

सायर: से भाइड़ा, म्हे भी घरां जास्युं। (उठ'र चालण सागै।)

[मांगू धापरी चप्पल पैर'र पेंट नै भड़काबतो वालण लागे। सायर भी भागरा दोन्यू हाथ जेवां में घाल'र पीम-भीमें कदम उठाती, खकड्योड़ो सो माग रेसार-सार पालण लागे।

(धीमै-धीमै मंधकार)

दूजो दरसाव

[सिम्प्रया रो बगत । दूंगर रै कारणी वेगो ई गांव मार्थ छावळो किरायो । गांव रो वस स्टैण्ड । पांच-गांव नाय-गांगी री दूकातां । सगळी दूकातां सार्य प्राप्य प्राप्यो मोत्र में मिलतार लोगों रे सार्य जम्या-बेटया लोग । जाय रो मनवारां । वसां रो प्रायण्य-जायण्य । जूबा सोगा सुं मिलण रो फगत यो के केंद्र-वस-स्टिण्ड । गांव रो राजनीति रो खास ग्रहों । लड़ाई रो पर । सारा फैसला वस-स्टिण्ड मार्थ हुवे तो सारा मामला वस-स्टिण्ड मार्थ उळफे । वस-स्टिण्ड मार्थ होस नुवी-नुवी वाता, नुवी-नुवी प्रमुकी प्रार्थ मुखां-नुवा सांग । धार्ल गांव में वम-स्टिण्ड री हलपत रो मोली प्राक्रेस परना ।

स्पात ई गांव में भी डो कोई ई हुने जको घोड़ी ताल वस स्टैण्ड पी राजनीति में हिस्तो लेवण मा कान लगावण नी झातो हुने । वस-स्टैण्ड मार्थ झायो विना कई लोगा रे रोटी नी जरें तो कई लोगा ने झावेड़ें नी । जको गांव में कटे हैं नी मिलं, वो स्टैण्ड मार्थ जरूर मिलसी । कई लोगां ने स्टैण्ड सूंतकरत तो कई लोगां पी सप्तनी दिन वस-स्टैण्ड मार्थ हैं कटें।

सरूप री नुषी-नुषी दूकान । लाम्बी-लाम्बी मूंख्यां छर करह स में सच्योड़े सरोर । ब्राह्मक री मी पिछाण तो नी गरण । बातों रा दमनजा घर गाळ्यां री रल-कारा । उस री दूकान मार्थ मदन, निरंबर अर मांगू बैह्या चायधीर्व अर गाव बावल बतळावें।

मदन : (चाय री चुस्की लेवती) बयूं, देख्या ना तमासा वो गिरीत जी रा।

गिरवर : म्हानै कांई कैने है, म्हारै सूं कीं ई छाना ती । मो तो गांव ऊदा नगरी है—अर्ड कुण कोई रो सगो है, म्हे जाणा हां ।

मदन: पण मारत्यो भाई साथो, मारत्यो भाई साथो सूं थोड़ी काम वर्त है। आज यार कण कोई रो दवेल है।

मांगू: (चाय रो गिलास हेटै मेलहतो) दवेल आळी बात तो सांची है पण भावमी थोडी साजनारम तो राखें।

मदन: लाज-सरम?

परः तूबायलो हैकाई?

ः लाज-सरम राख्यां, ई गांव में लावे कांई। थे म्हें ग्राज गांव सूं कोसां

दूर बैठ्यां हो, बार-निवार भागेर टावरा बान्ते मठ धावो हो। लोग सठ ई उल्लू बणार्या भर मीज उड़ार्या है।

गिरवर: मौज!पूर्टमना।

मदन: विया तो घरनार घेड़ी मौज नै। मांग: मोज तो भाई मौज है। वा यार-स्हार चावे नो जर्च।

मांगू: मौज तो भाई मौज है। या यारै-म्हार चाये नो ज मदन: भाषां तो भाषणी ह्यूटी मेर्डमस्त रैयां हा।

मांगू: क्यू, गाव में रैंबै, वै भी ट्यूटी निभावें है।

गिरवरें: (ह्म'र) हा, रुपूटी तो वर्र ई है। चोर ने बंब साग घर साहबार ने बंबे जाग। घा बम रुपूटी है बांडे? जिलो हमसा साग ज्यावे। रूप्य भी हतकी हरतो बाता से स्वात सरा

िसीनाहमण सागण्याव । रूप भाइसकाहरना बानाम स्यान समा लेवे घरध्येक प्राहकर्नहास रेडमारे सूब्रानसी दूबान साथै जावण रोजड देवे ।}

राग्पः, थे ईंड्सूटी नैवस मन समज्यो । भसासे भसा धरबुतासे बुता। दौन्युंहायासे लाड्।

मदन : (गरदन हिलाबतो) देख्या के सरूप भी भोळो कोती । सरूप : भोला सो स्टूर्न कोई नी लाग्या । सरला डिटक्स कुकारो पाणी

पीयोहा है। गिरवर: बर्रभोता सूंबो मततद नी । जनी बाज गांव नै बालाबों, दो स्टी

चरतर में चहुन्यों को साब रूकन्यों । मींगू : नेताविरी से बाज सबका मूं भोडी सामित्रत है । सरूप : महास बापनी, बचा सी सामित्रत है बो तो बचो है । बदा नेताविरों

माथनों में समभदार हुथग्दो । घर जको धात्र भी बातिनाक्षा नै

समप : महारा बापणे, बवा वी सामियत है भो तो बची है। बढ़ा नेनर्गतरो वी हामचूंछ बोनी बार्ग वे नेना बगर्बा है। मांगु: जहाँ हाम पूंछ बार्ग वो नेना बोही हुई।

मीगू: जदो दान पूंछ जालें दो नेता दोड़ी हुवे। सरूप: तो उन में बाई वैदा?

भागू: वो समझार हुई। नेतारियों घर समझारी रूप-प्राप्त हो बार्च। गिरवर: सेर, नेता में समझारी तो हुई पर साई दूर हुन हुन्य करावण

गप्तरः सर्नताम सम्प्रदार्गा हर पर बाहुव दुवान उत्तर् बक्याय से। ही देखान वक्षों जनो हुनियार हुम्मी को बनो ई बसो नेन्न बम्मी।

सरप: मही मा बात वर्ष लो है। उत्पारी यो बालू बाई है?

मागू: एक मैं सोद नेता कर्त है।

निरंबरी: (बोर देवार) कार्र करें, पूर्व है इस में । मूर्व मूं नेवार जिल्हा सार्व पूरा से बेंडक के बरवार सार्व है। मांगु: नेता री पिछाण ई मा है'के उण रै साथै हरदम दो-च्यार जणां रैंवे घर हां में हां मिलावैं।

गिरवर : हां. ग्राजरूरी है।

मांगु: नेता सच्चो वो जको दिन नै रात बतावे ब्रर रात ने दिन ! जको गरीव रैनी समीर रैसाथ रैवै जको न्याय रैनी अन्याय रै माथ रैके।

हिंकारो देवतो | हां ई' रूख सं ई' नेतागिरी जमै ग्रर निखरै। मदन : सांच रै साथ होय'र खाव भी कांई? सरूप :

मांगु: अरे सांच रो साथ देवें जणां नेता बर्गों ई क्यूं ? राजनीति गंगा रो पवित्र जल नी जठ आत्मा निरमल हुवै आ तो दारू री बोतळ है जिण मुंसरीर मांग ताकत बावड बर पछ ग्रांख्या रा डोरा लाल हवै।

गिरवर: [बात रो ग्राएंद लेवतो] है तो राजनीति ग्राई भाई। मल जी रो बेटो इन्दरो सरपंच रा चुणावां में जीत्यो ग्रर पछै देख्यो उण रो रंग । डाकोता री संगती जमीन दावली, चीणी रो कोटो आपर भतीजै गुमान नै दिरा दियो, पट्टा माथ पट्टो बणा'र गांव में भोबर विसेर दी गर भव याणे ग्रर तसील रो हर दिखावे बादवाकी। सरुप : [मुंछा पर हाथ फैरतो] इस्या सरपंचा स्र तो कोनी डरां।

सिमकावतो सो । अरे तन्ते थोडी इरावें पण गरीब री तो मदन : विगाड देवै ।

माँग: ई रो कारण है। नेता गरीब री इमदाद नी करण चार्व वो फगत धापरो रोव दिलावै अर दुकान जमावै।

[हंसण लाग ज्याव] तो जणा म्हारली तरियां नेता जी भी दकान-सरूप: दार ह्या।

[हां भरतो] दकानदार भी किस्या । चीन्यां राखी पण बेची नी । गिरवर:

सगळी चीज्यां मार्थ पड़दो राखें। घेक ई दूकान में सोक्यूं मिलें। मीठी गोळी. दरद री गोळी, पोडी धारी गोली, नसेरी गोली घर बंदकरी गोली। हा. नेता तो रामबाय दवा है। भाज मन्दिर में जावण जररी नी माँगुः

वण नैता मुं जैयम की से रासणी करूरी है। नेता सकी तो पर्छ भूलाई दुनियां वेराजी। जे सिर मार्थ नेता रो हाय तो पर्छ मारो दूनियां रैसात। सहप: हां, भाई कळवूग रो खुदा नेजा।

खदा नो बदगी करमा को देवें पण नेता नो फगत लेवें ई लेवें। मदन: हा समय खानी बोट ई ना । समभायों ना """ । गिरवर .

ममभग्यो, अनो भोनो घोडो हैं। मह्य.

गिरवर -

जको देवण सीलाधो, यो भोनो कड़े? ई बास्त महने तो लागै के जनता भोळी नी है बानेता सूधीक कदम धारी है पण मोकी पड्या नेता है साहै है।

मौग मोर्गतो स्पेरधार्वसर चल्यो जार्व। नेता थोडो समफदार हर्व, बो उणनै घोडो बणाय'र उण मार्वमवार हय ज्यावै।

सम्प पण बापजी धौदा माथै चदणो घानान नी ।

मौग धाकुण कही ?

गिरवर घोडों भी कैंडों भागनो हयो।

मौग हा, मोको भीडो ई भाग तो घोडो है जिलगी सवारी दोरी घणी। इल रै सवार ने ई धसली नेता केंबै।

सम्प ठीक वही। कई मदार बणर्ने रानाफडा तो पीटैपण गुलगंची ला ज्यावै । नेवरी धाला भोम जी नै देखो पड-गड'र भी ग्राज ताई सवार नी ह्या।

मदन . धरे सार छोड़ वारी बात, बार्न तो नी घोड़ारी पिछाण घरनी गयारी । घोडो समभः र गर्धमार्थ चढग्या ग्रर बोलात बाई तो उप नै हुइन-इटल कर दिशे।

सम्ब: मततव घो'क घोड से पिछाण जरूरी है।

[उणी बगत पिरधी रो ग्राबणुं। फौज री नौकरी मूं रिटायर पिरधी सबै रोडदेज रो चातक। धुलयुत्रो मरीर बर मटिया रंग री पतलूत। स्रामी कैन्टीन सूं ल्यायोड़ी धी-एक्म बोनल रों मूडें मुंतिकळती खुनबुः]

पिरथी: [पाटिया मार्थ बैठनो] छरे बाबळा घोड़ा तेरा बाप-दादा भी देश्या हा काई ? चाय बणाय चाय । [माग कानी देख'र] माज किण बात री धांबळ होय रैयी है। चोलो मजमी जम रैयो है।

र्मागुः थित रैमाथ भिजोगपडनी देख'र प्रतगर्नतीली घर नृंवै दगस् उठावतो] धायळ तो कठ कीनी ? धारो तो काम ई धायल मचाण है।

पिरथी: घोडों तमक'र । जाऊन का गस्या, बाद बात करें। महै किण रो ब्याव विगाउ दियो घर किश री भैस स्रोल ली।

मदन: भैम लौलल्यो, कोई पोल है. डागा बाळा नै जायो हो ना।

पित्रथी . ता भवत र बाई है, समापा बोनी । सदन [समाक करता] च धर पक्कर कोनी समझ्या, ये तो सुर TITT PL .

विस्थी . [भोड़ा सुरमा वर'र] पत्तर हा भी हा । प्रायी माई से माप नोई

मामि। महें मा हाती दार र वेया हा विषय में माल बाजा माहा दवा है।

गिरमर: [हुबारे मार्थ] के जी। गोग. [भीते सु] अव तो स्थेर पट्टा रैया ई कुठे। तका पट्टे में हा वैदें मन मं उभा है।

विरधी . [बहम करतो] तो गहे काई बेला कही । घोडे-वार्ड केवा हा घर नैवस्या-कोई है माम दम हुवै तो स्मावी घापरी दान तत्तवार। काम समयार तो रैई गर्छे ? पण काल तलवार रो ई जमानो हो। मांग :

थै मोग काल समयार मां बर्द कराया कोनी । भीके माथ मदद करणे बारने बायन्यतकार सारी । मदन : हो. तो दाल-नलमार रो भी नेम हो, धीक मरजादा हो। उन जमार्न

में हथियार रक्षक हो, भक्षण नी।

बाज तो दाल-सलवार री जोर बोई नै मताबा मारू है। र्माग :

िबहरा री टेडी-मेरी बातां रो घरच पिरधी रै दिमाग में नी आय रैयो हो, की मगो भी ठीक-ठीक उगण साम्यो, ढाल-तलवार री वातां मूं और भी जीस छमग्यो ग्रर इया भी सराग्यो'क ग्रै लोग डाल-तमवार री बात मुंपिरथी री कीम री की काट भी कर रैया है पिरधी धेक-दो बार माख चढाई घर प्रापर होठा पर

भावती पापड़ी नै गुठै धर ग्रांगली सू मसली।] मायां बाढ्यां तो ठा भी पड़ ज्यावै। पण साली सेर मैं सवा सेर

पिरथी: मरंकी रामाथा बाढ़ दिया। गिरवर : विलस्यो कोनी । मिलसी । कुण सी सगला री नसबदी हुयगी । भदन :

में तो काटया कवो भरे है।

पिरथी :

[थोड़ो हस्यो] अर भाइड़ा तू सांची कही । कठ नसबंदी है । ई गांव

िसीन्यू हंमण लाग ज्यावै । मरूप रै कोई ब्राहक ब्राप्ट सूंबो उग सूं तिळावण तार ज्यावै । मांगुरी कोई जाणकार मोटरे मूं उतर दुकान सामै आर्वे गे यो उण मुंरामा-स्थामा वरण लागै ।] गिरवर : ग्रुटैहार ग्रवल ग्रार्टनी। मो क्यू मैंगो ग्रर मुश्किल होरयो है ग्रुटै मंत्रीन बरावर चाल रैंबी है।

(15)

पिरयी चार भी भाई, ग्रुठ नो उचा ई राद्या रोला करनी र इसाई पावणा जीमनी । मदन म्हारो केवण है के जजाना नै दल र चालण चाये। िरोस में] बाठै तो जमाना नै बदन्यों है। आ बोत तो मानी पण जमानु काई उर्ज-धण जाया धण नाम । वै भाग जी रै देशों पूरी पलटण-गाव नै ध्रघर उठा सम्यो है। ग्रेंक

विरधी गिरवर मैं हेतो देता ई मात मुद्रा काई है। पिरथी सार वाग जी ता वाग भी इंटें। बद नवदरी द्याळा वैस्त सराभी जना यार इयर में चढ्यों घर पांच दिन नाई बर्ट ई सरी महाई मरभी नाई घस स्वोदनो स्थी। गिरवर र्थर समापाई साम जी जैंडा हुई जला ता बेडा पार है इस देन रा। ियो हरकी-शुरूकी बाता सूधिरधी यो तसाद क्या हुयो ग्रस्ट बन ते लाग्दा क बहुत सब लाग जी रेमार्थ है । मानुबात कर र पाठो पाटिया मार्थ साय र बैटस्स

मरसम्बंभी बाता में रस सेवण लाग्दी।

पण यी नै ससवार पान भी ओ भी साञ्जूब है। यो यार वदेर मारकण्यणयो।

मीगू: पर्छभी किण बात नै लेव'र तलबार ग्रामी—सामी ग्राई। पिरभी: कूँजार्थं इन्देरारै ग्ररम्हारै सदाठणी। बो बार्बे सो स्हैदावें।स्

पुरिषा वा वाय सामहित्य प्रस्तात स्था अप प्राप्त भी देव देवा है सही कहीं है हिस्सा के किया है कि स्था अप प्राप्त भी देव देवा है सही कहीं हिस्सा हुए से होगों की, पण जे उप से हिस्सा हुई से होगों की, पण जे उप से हिस्सा हुई से होगों की प्राप्त की स्था के स्था की स्थ

तलांकर काढ्या है। इन्दरां तो न्हार साम काई विदिया है। मांगू: पण न्हें तो भादर वास्ते पूछ यो हो ग्रर घार इन्दरों गडर्यों है। पिरयी: [जोग मूं] वी भादर री पूंछ मरोड़े ई कुण है जको वो मारणे होय रेंगों है। ओ इन्दरों है तो हैं नीतर भादर वापड़ा ने पूछ कुण ?

बातों म्हारे सामें बूची है बूची। मदन: बाह भाई विरधी। जकी लोगों रातों गैला बन्द कर राख्या हैं। डांग मूं जको लोगा रा चबूतरा कोड़ नारया घर सरपंचाई री हैकी मूं जको भागी ताई रो गैलो बताबे, उल ने तु बूची केंबे।

पिरथी: अर्र बूची ई तो है। तूचाये ब्रानै सरंच रा गुरता मानले। मदन: हां सर्पचाई रो मतलब ई लाठी रो जोर है। मांग: बट ई तो क्ष्र केंब्र टूंबो प्रवासक टैकाई। जब्दो खाबें, पीर्व, मीर्व

माँगू: जद ईतो म्हें केंबू हूं भ्रो प्रजातन्त्र है कांई। जको क्षाम, पीवे, मीज उड़ावें भ्रर साथें ई साथे डांग पटेलाई करें, वो सरपंत्र है।

उड़ाव घर साथ इ.साथ डाग पटलाइ कर, वा सरपव ह । गिरवर : लाठी रो जोर तो सदा ई रैयो । ठाउँ रो डोको डांग नै फाड़ैं। माँगु: ईंरो मतलब ठाड रो नांव सरपंचाई है।

गिरवर : सरपंचाई नी । कोई भी ब्रोहरे मार्थ हुवो ठाड जरूरी है । ठाड में हैं ठाठ है । केवण ने भवाई, इण ने प्रजातन कैय देवे हा राज वेवारा

ती हाल देवन्यु उत्पोक घर नेतावा रेलारे भागण धाली है। माँगू: धरै बो ती नारी है—प्रशतन्त्र रो। प्रशाने ठणणे रो नृटण रे धर उस्पर्ने उल्लूबणाई रो। राज तो राज है अर प्रना बाएही प्रशा। प्रजा रो काम बोट देवणू है घर नेता रो काम इस समकार बोट नेवण है।

गिरवर: हां प्रजा तो बापड़ी गाय है, न्याणू देल्यो घर दूहत्यो । मौग: [टेड सू] मंडी बात तो नी है—कदेनदे लात-फटकार भी

्: [टेड सूर्] झंडा बात ता ना ह— कद-बद लात-फटकार भी दिलावै। जको लुद नैषणी मान'र दूप चावै, उणनै साय भी दूध नी दे भर जको गाम री सेवाकरै, [बो चामे दिन मे च्यार बार क्यूंनी दूध कार्ड।

मदन : हा, ब्रा तो ठीक है, गाय र यण भी है तो सीग भी है जिस्यो नी सं,

उण मारु बीम्बो ई बरताब करैं।

गिरवर: भ्राती सब कंबण री बातां है। प्रजातो बेसनयां पड़योडों गाय है। इं ने तो मांगड़ों देय'र कटी ने ईंटूरस्यो। थोड़े से चार्ट पर कटी ई बुतास्यों भर देथ काडस्यो।

मींगू: [समझातो] घर जद इतीयां रेघांदी होच रैसी है। बग, भव माल गूं में कर हैं नै दुर्वे—उग बखत तो सळ-गुड, बाटो-घरो प्रर क्ती-पतों नी कार्र-वार्द देवें, पछे तो द्वा गाय खुट बणी ने रोजनी पर देवी प्रचीता लाती फिरें।

मदन: भाई, ब्रसली हालत तो ब्राई है।

गिन्यर: गाय को स्थान होता आप का रही । टेम सिर मुख ते, उस में ई बी पुत्रकारे, ई रेहाथ फैरे घर ई री टेम सिर मुख ते, उस में ई बीचे पछे जे कोई दूध पीर सत्राय तो इस मूंबडो इसमाग काई कहो जा सके है।

मीगू: प्रा इंतो है। तीग दूब भीगू चार्व, प्रम गाय ने चराणू अर सभागण नी चार्व । हा विया गाय अब चोडी-चर्चा समस्दार भी हुम्मी। सोर-चास देप भी कोनी देवें तो लात भी पटकारें।

मदन: म्हारे लयाल मूं नाय जिल दिन दूध देवण मूं पैला लान दिलायणी सुरू कर देसी, इण दिन देस रै मांय प्रजातन्त्र री जीत भी होसी।

पिरपी: मुफळी रैष्ट्रंतका नैपरै नाल'र, हाच फहनावण सापै। नमो भी की श्रव मोहो रंग पकड़णू सुरू करें] और, किण बान से प्रशतनत । औ तो भेळवाड़ है, चरप्यो मो घरप्यो श्रर मोडें जाप्यो अभे रेली।

मांगू: [योड़ो पिरपी पी फिरती धास्या पो रंग देख'र मजाव मूं उन नै चढावतो वैवण सागो] यारे तो धायन्यो प्रजानन्त्र ।

पिरयी: मठ तो जुती में प्रजातन्त्र राखां।

गिरवर: जूनी में तो बटका राखता। यारी तो जूनी लोग खोगरी। प्रव चपतां है-चपतां।

पिरधी: धरेला बादला। बेदूबा देल अहा प्रजानन्त्र रैनाह मार्थ गैना होन रैना है। मार्था तो दान राना मर दान मुंई सादा। चावे कोई भारतील हुवो अर चावे कोई दुवो।

मौगु: स्त्रु' फटनारा मारे । गांव मे दो दिन बावे घर रोव दिखाई ।

गिरवर : मरे, लाई मै बन में सवारी स्वारती रैव ना जणा बरे काई। गांव में प'ट लेय'र हेकडी दिलावै।

पिरथी: घरै, जापुगा। बस में भी देशां कोई चुंतो कर सेवै।

सदन -बस जाण दे। बठै प्रजातन्त्र है घर घठै ठाक रपण । पिरथी : [गुम्सी में भाष'र] तो ओ ठाजरपण तु उतार है बाई? (गिरफी

री आंत रा डोरों मोड़ा लाल हुये। उप रो तेज भाषान नै गुणेर स्टैण्ड रा केई जणा भारी-पाने भा'र कथा हय ज्यावे ।) मदन : ठाकरपण भी उत्तरयोहों है, ई' नै फंटवाई घेष्यों रार्स हो है।

मरजी । पिरथी : ठाकरपण्, मर्द कोनी नमझ्यौ ।

।मांग : भीर, जेवडी बल्या पर्छ भी वी रो बट जाय मी। ई में बारों देंग नी । नी कैवण मुंठाकरपण्मरेतो नी ठाडाई मूं ठाकरपण्रेरे ।

में बसत रा मोल भाव है, है बानी जल-जल माज ठारर है। पिरधी : [जोग में बाय'र] रैंगरे रै बार, क्यू गिर मार्थ परे, पर निमारी ई' रो मनलय तु ई झानचन्द है याकी तो मैं भूम फाते हैं।

म्हें तो पूछ पातवारी वहीं कोती। बलत स्वात पूर बटा दें। सीय : देखी कोनी जर्ड हाथी संघना बर्ड मात सबसी से स टी गांड शहरी है अर जर्ड धैमचाल मचती बढ़े घात्र गुनेड गोर्टामोरुमा बैधे 🖡

बर बर्ट हरम अर लग्मा पणी मूंदिन उपनो बर दिन दलने की हेपी पाइया ई कोई बीची गी। पुंच भाई, बाई-वहार बैबली गूं बाई ? भी तो मन में मोतीशाम ?! मदन: सारो तो टगरी गणी।

[बानरी समर्थन बरना यहा] ही, भी सुमी, मात्र से देशम हुई ना विक्यी : गुन्ती। बाबासामानी भी दैसना है।

सेंद्र, बाव से बोर्ट यून बीती, मी बाव बारी भर नी बाव बतारी । मोन् : को सल्यान को है है खर गहारा बराबर है।

मदनः कणां घैतो विपर्तजीवय देसी ।

पिरयो : महे क्यि नै मारा हा, मैं अपना करमा मूं मरे हैं।

सीम्: वरम में तो हुण वैवै। विसोर से मिर कुण फोर्यो ? मुनेर रै कुता हुण सार्था घर सवत्त दरती में स्ट्रा स्वार से वेदन्तती हुण बनी ? वोर्ट में सेन मुख्या क्याय है तो कोई से बकरी बाग लेवें है तो कोई दिला में ज्योत काव लेवें है।

विरथी . धे तो सदा मुंहोता धाया है, बाज कुण सी नुवी होय रैंगी है।

मदन: प्राजहोय रैयो है, आई नुवी है।

तिरथी: धाज गाई है? सींग प्रजानन्त्र।

पिन्थी. प्रजातन्त्र है तो घडाइयां म्हानै मुद्धी पर। की री मालाडू साय'र इस्यो जायो है, भीर नै गेस्द्रमातो।

मांग : हैं। बहुया की तो लाल टाव राखी हवेली।

पिरची : नी टान रागी तो अब टानद्याना, काई बोल बोर्स है। गिरवर : स्यो छोडो बार, नोई राग्यो है, ई बक विलोबा में।

शिवर समला भुत हो ज्यावै। सीगू दूती काली देखण साली। मदन सरूप राभीमट काली प्यान देवैं सर निरंबर भी सीग ईसाय भुलकबालाय ज्यावे। पिरणी नै साणे हैं छेहछाह में की सास सजी नी प्रायो साणू, मिदन झर निरंबर रिश्वेक होवण सुपिरणी री पणी चली ती।

मौगू: [मदन ग्रर गिरवर कानी देखतो] तो त्यो धावो, थोड़ा तलाव ताई घम आवां।

मदन : हां, चालो [तीनों जणा उठ'र बालबा लागै।]

पिरथी: [सरुप सूं] ले यार प्यादे ओक चावड़ी।

सरूप: [सुस्ती हटावतो] ई रै ऊपर बाय चलैगी काई? [हंसण लागै]

पिरथी: [हंसतो] अर्र कठ नती है, उत्तरणी यार । देख्या ना प्रजातन्त्र रा हिमायत्यां ते । देनियां ठा नी किण रे माय गैली होग रैयी है ।

सरूप: सै म्राप रे हिसाब मूं सौचे है। ग्रेक दूजा ने से गैला लागे है। म्हनै

ष अर थाने महैं। दुनिया रो ग्रो ई ढारी है।

पिरथी: [चाय री गरज करतो सो] ग्रर्द ठीक है, गैलो तो कुण है?

पर्ए ईंगांव में तो आपर्एी चलसी। आपर्एं लट्ठ रीचलसी बर यापए। भानां-कानां री चलसी।

सरूप: तो ज्या चाय भी चलसी ना।

ग्रर लोग ग्रापरै घरां कानी दूकरण लागै।]

पिरथी: चलसी रै भाया, तेरी चाय बास्तै तो घर री चाय छोड़'र ग्राग।

परा आता ईं म्रां मूसळचदा सूं पाली पड़ग्यो । [पिरवी घोमै-घोमै चायरी चुस्की लेवए। लागै। थोड़ो अंधेरी भी बढ़ै

(घीनै-घीमै ग्रंधकार)

तोजो दरसाव

िरात से पैलो थोर। आज्ञान रेमाय भदरी-मदरी ज्यानणी से मुहाबण प्रकाग। रात रैमीफल से ठावी ठोड सामली से गट्टी। ज्यान्मेर सूनेड पण पसा रेमाय दावर-टीक्स से रोलों रूपो घर सेटी औम रे गर्टु मार्थ हपायी सार साबना लोग। दिन भर से सापती साम नहाणी तो गाव रेमले-पूर्व मूम से मारी-माडी अत्वर्धन। में के तरफ दिन भर के काम सी हार सूंथवसीडों डीत भर दर्ज गानी बाना से मीडो चनको।

मायर अर साधत धापर मुख-दुख री नै घर-परिवार री बाता में लेय'र मदरा-मदरा बनलावा हा, उणी बखन बकार लेवनो मागु धार्व ।]

सायर : भाव रैमागू।

मौगू: बैठ्याहो काई।

सायरें : म्हें तो भाई ई बड़का रै ठीड़े माथे ई बैठ्या रैवा।

सौनत : आंठीक है। बडकारो ठीडी पकड्यो रैयणू चाइजे। बटको नै तो प्रान्ती पढी डेंबिसान्या है।

माँगू : विसार्या तो कुण है। ब्रादमी घाषोग्राप विसर ज्यावै।

सीवते : पणक्यू ?

मौंगू: इण राभी की तबसुदा कारण हुवै।

सर्वित : म्हारो मनलब, मिनल माथे को हुँ ही बाना भी हुवै जियनै विसारणू मैंन ई फासान नी हवें।

मींगू: [तर्ज करतो हुयो] वे बाना ग्रेक टीड ग्रा'र पाननू मी लागन लागे, इण वास्ते उला ने समाखण जुन रे मुजब उचिन नी लागे।

सौंबत : हरेक आदमी इणी आबार मार्थ पुराणा ने अंगेजराूं नी चाते । मीगु : बिन्तुल टीक ।

सीततः जणायारी निजर में इतियान कोई है ?

र्मीगूः विग्यापन यासिराली देश्य रो तक्तियो ।

सिवते : [धोटो ईर'र] जचा तो भागा धा वास्त्री इतिवास पुर-पण्यो है। सिराणी तो तकियों भी साथ अर तो साध्या भी तोड माण्यारी।

[सायर, सांवत धर मागू तीनूं हमण लागै सायर नै ब्रचरज हुर्बंक रिण दगरी बाहा में मागु अर सावत लाग रैया है।]

सायर : [माग् कानी देखतो हुयो] भाइड्डा, सावन नै ग्रोटात्या लेवए हाथी नै ग्रोटास्या लेवण है। साँवत : नी. घडी बात नी।

: तो ग्रीरकाई? सायर

मॉग : देखो, महै तो ब्राज जनो की पहुयो-सूच्यो ब्रर की भण्यो-मुख्यो बी धाधार मार्थकैय रैयो हैं।

सीवत : नी भाया त सांची कैय रैयो है, यारो दोस नी। महारो भी निजू जुजरबो हैं। आली जिन्दगी रेत नै सली करी है धर उण र माय को सोध्यो है। पण हां, की हाथ आयो है, वो की मती है, बी री ग्रापरी पिछाए। है ग्रर उसा नै महे छल-कपट नी कैय सक् ।

पए। यो रै ग्रर म्हारै में की फरक है। रुल्योड़ी चीज नै म्हें ^{ती}. मॉग : सोधां। जरूरत मूजव चीज ही कीमती है। सौबत : [मन में की बात नै घण थिचार'र कैवतो] थ्रो की छोटी बुर्डि

मूं सोच सुहै। रूंस री छीया चोखी नी लागै तो रख बाट्यो ^{जा}

सके हैं पए। जड़ां तो फेरूं भी जमीन में रैसी। महं इतियास नै हमें में मजबुत जड़ श्राली पेट मान्यो । [तरक करतो हुयो] पण था थकै पेड़ री बात बरो बो टेंड भौग् :

जड़ामूल सूं मूख ग्यो अर जकी चीज काम री नी हवे, उल रो बोर्स घीसणुं महै तो बुद्धिमानी नी मानूं।

सांवत : तो इतियास थारे वास्ते बोफ है।

माव बोमः। म्हारै साथै इतियाम बो ई है जवो रोज म्हा^{ई माथै} मौग्: वर्णं घर मिटे । ब्रो लएानू-मिटण्ं म्हारो है-म्हारी जिंदगी रै भें खाम बगत रो तर-तर मंगसो पहुल भाषो काल-अम है। इगा रै भनावा जकी बानां मार्थ दोल निर्दान, तस्थीरी बर्ग अर गमेत्र से नमी चडायो जावै, उस्मा नै महै तो इतियाम नी मार्न । सौवतः भाषा जद ई मैड़ी बहगी घर छपरा उद्गया । [बी समभता बनी] हा, या बात बही । स्वी भाइहा छोडी मी

वाना मैं, बयां में उनभागा। नी उत्तहवा कोती। उत्तहवोड़ा नै काहा हा। सीवत :

सायर :

निंदी प्रतरा नामें। योदी नाड मुखी ई बीम मार रे टाइस री घातार 1 तीन प्रचालवर वंश में कान नहां लेवें। मांड रै नार्ट कियों री दहांठ घर साथै ई. परे हडकारसे से दो-तीत दका आसात]

सायर र यो इस मी सार्व है?

र्मीम् : [मजार बरनो] धर्ड माठ ई माड है। बाएडा नी रोई में रेग्या, मा मा द्रव की वे हैं।

[हुकारो भरतो] हो वैता लो कोई जबहो ईसाइ ह्या करतो, धव रामीन्य सी से टाउँ है कि। चीप र सद हमरा साम ब्यावे ।]

[मार् पर माउन भी हमें भर दान्यु माठ सानी देखवा नामें ।]

र्गीवतः धर्मीनाशे बूण मानै, मागुनो धर्दीन मानै । पैला नो गाउ देशा विकासमा । रहने याद है मादल जी बाबाजी पर माउ छोद्देशे हो। साह वर्त ने दर्भ र ष्यवाश नास्त्रण पड़ी। डील-डीव विश्याह कर मीता भीगः दशाह मू पूरी व्यक्ति गरणाती पण मजाल काई टाबर-टीकर या छाट-वर्ड कानी कर भीग हिलावती ।

सायर . [बार मैं थोड़ी परदता] भारता ग्रय तो मारकणा नांड घणा है।

मांग ः [बार कोटना] सार्या बन्ताप से र

सायक मार्या तो कोनी, पण दकाळ तो मुदै सू लेव'र सिझ्या साई मर्गा है।

सावत: [भोड़ी हम'र] ग्रब समहयो यारी याता । ग्री तो टाइबाळा साड है ग्रा री बात छाडो । घै तो टाई हिया—साट हा धर पाठा किया करें-गऊ राजाबाहा, धा मे है।

सायर : पण ग्रीटाइल भी चोजो कोनी।

सावन : काई वम वार्ने ?

1

मांग् : [थोड़ी मजान बरतों] देखों टाइए में भी नुक्रमान कठे हैं। ग्रो संसाब रो तसीको है। ये गाम बण्या सूटै मार्थे ऊभा रैयस्यो जणा तो कोई फूम-फ॰ई भें ई की पूछी। टाट्या थोडो ध्यान तो जावै। गावन : महै भाषा, तू पड लिय'र मोरबू' नमकायो । जे सोड टांड ई तो रोई

में जार'र बयुं नी टाई-ज्यन्ती में टाइग्ग ठीक बोनी। मीतृ: रोई मे मुर्गेषुण ?

मायन नो यो सुमारा मान्टाडै काई?

मागू: म्हारों मनलब धो हैं के टाइया जिलोग उरै। साड घर पछै डोई नी यो नो बाछड़ो है।

सांवत । पण सांड नै क्राभी मानस्मृचाइजे के नाय उणनै ई ध्रीकलों नी जागी दुजा भी मांड हय सके है।

सायर : [खुस होय'र] भली कही सावत । सांड नै अतो गुमान नी राखण् चाइजे । स्रो ई खोटो है, पछ भाइडा दकाळ सू कुण सी भीता पडें है। [सायर नै थोडो जोस ग्रावै] महिग्रा सांडा रै बीच में रैंग रैया हा, पण देख्यो कोनी आ रो मारकपर्ण [बांबा हाथ रै ग्र गूर्ड ग्रर सागळी सुं मूछ्यानै ठोक करण लागे अर चेरै मार्थभी ^{योडी} ताव बढरा लागै।

साँवत : [सायर री वात रो उंडो अरथ समऋतो हुयो] ग्ररै छोड़ सावर, ग्राबाता नै। श्रौसाड तो म्हारा जाण्या-पिछाण्यां है। श्राबापडा मे क ठैदम है। खाली ढोक्लो दिखाद्यो अर बाजार में ग्रां^{दे साहछ} घालद्यो ।

माँग : ग्रैतो चाटग्राळा साड है।

[हसतो हुयो] आ चाट ई तो दिन धाले है। चाटो ग्रर चटावो-सायरं :

थ्रो ई सगर्छ होय'रैयो है। [मजाक करतो] भाया चाट यूं सै राजी है-भगवान भी विना सावस : -चाट के खुस नी हुवै, पर्छ आज रै जुग मे तो छोटै नै छोटी चाट अर

वड़ी नै यही चाट। [मजो लेवतो] ग्रजी ग्रो कळजुगनी चाट जूगहै। चार्टमो लाटै।

मांगु: पर्छ चाट भी भात-भात री है। सगळा री ग्राप-भाप री पसद। पण काई करैं मिनल री मजबरी है। साँवत :

मौगु : वग मजवरी ही चाट है।

चाट में ई ठाट है। सायर :

स्रो भाज रो जुग घरम है--द्यों घर हयो, खाबी-प्राबी घर धापरे मांग : काम बणावो ।

[स्थिति नै थोड़ो मन में गोख'र] गंगा उल्टी बैदण लागगी। सांवत :

मांग : नी म्हनै तो नी लागै।

थे हाल टावर हो, कालेज मुंनिकल्या हो। यानै हाल जिंदगी ^{री} सायर : काई हा ? थे कैवो, वा म्हान मंजूर है पण जायज काम रै बाम्ने भी चाट । या साब बोदी अर गळन बात है। काम री तनाया मिनी

पर्छ मुफन री चाट की बात री रे धा लाग है-चार्य सरकारी काम हुवा या गेर गरकारी। तीर्व मांगुः मगता ज्यु हाथ पसार, मूला ज्यु जीभ सपलपार प्रण दिना घाट सीर्थ मुंबात नी करें।

```
लोग केंबे क्युं, अर करें क्युं, भा सो माज मामूली बात है अर इया
          करयां विनापार भी नी पड़ी।
सांतव : तो गांधी जी शे सगळी बात आदर्श ही काई ? मांच हर जग मे माच
          रैयो है अर साच नै सगळा चाई। ग्राज काई साच री कीमत ती।
           ग्रद सांच री बात ग्रादर्श लागे, ग्रा म्हारै तो कम जर्भ ।
भाग : महारो मतलब को हैं के साच ब्राज भी आपरी ठौड है पण मांच म
           काम दिगडी घर भठ सुंकाम सुधरै। ई बास्तै भठ जरूरी है—
```

सायर : चैर, भाइडा, बा तो सगळी दुनिया में हैं। 📝 🗇 मागु: [मावत कानी मुड'र] ये जकी बात कैवी, वा म्रादर्शनादी घणी है।

चाये नेता हवो, था कचेडी हवो। सीयर : [हंकारो भरता] समभःग्या भाइडा, धात्र भूठै री इज्जत धर भठ री चल है।

गागु: ई वास्तै भठ सीक्षो, भठ बोलो। सांवात: [थोड़ो निरास होय'र] हो सकै, महै धारी बात रो समरयन नी कर सहं। पण साचरी जगा मुठ रो मान बध सकें, धाबात म्हारै गर्छनी उतरी।

मागु: [मजाक मे] वण जणा गळ नै बयुं सराध करो । लोगो रा ती गळा भाफ होय रैया है।

सीयर : पिड़ी कानी देख'र] घरै बाता ई बानां में दस पत्रन्या। सांवत : [अल्वतो सो होय'र] बात रो भांत नी हवै । ह्यो धव तो चाना ।

माज तो खब हथाया करी।

[तीन्य उठ'र बाय-बायरै घरै जावण लागे।] [धीमै~धीमै मंघकार]

चौथो दरसाव

[सुत्रै रो बखत । बस स्टैण्ड री चैल-पैल । सरूप री दुकान मार्थ वर्ण जणां री भीड़ । केई ग्रापस में धीमै-धीमै बतळावतां । केई लोगां रै चेरै पर रोस पर केई डरयोडा सा ।

भादर ब्रापरा पायचा टांग्या पाटिया मार्थ बैठ्यो है। उन रै सारै बैठ्यो है हणमान अर मदन । या रै भ्रामै-सामी केई जणा सहुया है। सहप चाय वरावी स्थिति नै की भडकावण लागै।]

सरूप : ओ गांव तो डबग्यो ।

मदन : काळी घार इवस्यो ।

सरूप : यव काळी घोळी रो तो ठा नी, पण बाहाबरण साव विगरायो ! (चेरो गंभीर पड ज्यावै ।)

भीड रैमांय सूंमांगुनिकळ 'र दुजै कानी बैठ ज्यावै । सरूप उण नै बैडता देल लेवे । वो उन मैं पाटिया मार्थ बैटन साम क्षेत्रे, पन मांग घे बानी ई है ज्यार्व, योडो-योडो हंसै । दो च्यार जगां माग रै सारै लड्या हो ज्यार्व ।]

: (बैठतां ई) हां, तो काई कह्यो, बातावरण विगइम्यो काई ? मांगू

सस्य : हा, साब ।

मदन : ब्यूंसरूप [उन नैहकारी भरावती] ई साथ नै मृशाव नै इन्या ।

मांग : पण प्रवाद तो गारै हुई, बड़े ब्रुग्मी नुदी बान है ?

[हम'र]स्यो नुशी कोशी ? सम्ब

: यता ? मांग

रहें काई बताऊ नो भी धारणा मुंदेगों बर काता मु मुल्लो हो बर सम्प कान काई हुई, ये भी मात्रा होती ?

मांगू : कार्दशांती ? सहीं : वर्षे बादरा बलायों, वा मूं बाई ग्रानी है।

: (हम'र) सरे, न दश काई होग्यों ?

मांग : म्देश नोग वेस्से। सर्ग

[भादर घर हलमान चाय पीवस कार्य, वे कार्य ग्रंट मार्ग री बात नै ध्यान मुंगुणै धर दता जवा घेडे – छैंडै बनळाय रिया हो, उलारी बात सारू भी कान लगाय लेवै ।]

मांगु: पर्छभी रगडी कांई हुयो ?

सम्ब : धजी बापड़ा नाचु नै पीट नाम्बी।

माग : बर्द ?

सर्प: यान घीणी मुन री ई। बी भी गयी त्यावण वास्तै। प्रव थे आणी हो - चीणी में तो तोल घर मोल गोज्यां में गांठ कार्ट है। नाथ घाट तोलएँ रो भैतराज कर्यो, पर्छ काई हो, गुमान जी रा लावरी कठ

पकड तिया धर सीम काढ नास्यो। मोग् : भातो गळत है।

सर्प : गळन भैवर्ग न बाई हवे ? गरीव रो हिमायती कुण ? ई गाव में भोक भी इस्यों माई रो लाल कोनी जको नाथ री तरफ संबोल्यो

हुवै । हैग्पमान : (बीच में ईमबाक करनो) दोलै कृण ? सगळां रै घर मे घीणी

प्रगै।

सस्प : जरुर पूर्ग । ग्रं दिकालांसिंग जी तो पाव-पाव चीणी में विकस्या ।

मांग् : (मजाक में बोलतो) चीणी से ती. धेक-सेक चाय से सापरो ग्रापो खो दियो ।

भादर : (पोड़ो ताव में) तं बोलै, जठै जार्सा है। घरै लाळ तो सगळा रै मूंदै पढ़ी, पण चीणी खारा दोरो घरा है।

मांगु (हुंकार साथ) जरूर पड़े। खासी जको पासी भी।

भादर पण खुवाएं हरेक रैं बस री बात नी। की जोर मार्ब है।

मांगू जोर तो काई धार्व है। सरूप तो ब्रा कैय रैयो है लीग पाव-पाव भीणी में बिक रैया है ग्रर महै कैवं पाद चीणी ने छोड़ो, लोग तो

घेक चाय में सांच ने भठ बर भठ ने साच केवण वास्त तियार है। भादर :

महैं कह्यों नी, कैवरा सोरो हवे है।

हैए।मान : पए। भाई की भी हुवै, गांव में जको हो रैयो है, वो माड़ी है। संख्प

म्हनै पूछी तो भ्रं बोट बंद होवणा चाइजे ।

मांगू ं बोट ! झरै भ्रो प्रजातन्त्र है, बोटा सूंतो राज होय रैया है। बोट ल्यो, नेता वणो धर पर्छ राज करो ।

सस्प घूल इस्या राज में।

मांगू : वयु ? सरूप : ग्ररै घर-घर में दुपांता, गांव-गांव में दुपांता ग्रर कीम-कीम में दुपांता । मांग् ः तूइण नै दुपांता कैंवै है। ओ तो हक है—सुतंतर निर्णय लेवण रो। थ्राज घर, गांव धर कौम रो कोई दबाव नी, कोई घुस नी। इगर्न ई तो प्रजातन्त्र केंबैं। सरूप पण काल तो उल्टी बात कैय रैया हा।

मांगू कांई ? सरूप ठाड रो नांव सरपंचाई। मांगू : हा, श्राज भी कैय रैयो हं।

: जणा प्रजातन्त्र सुख रो झासरो या गोदम रासो । सरूप म्है देख, सीघी बात कैय रैयो हं—ग्राज राज तो प्रजातन्त्र है पण मांगू बो है कठै, आ देख एंहै।

थे तो सा पढ्या-लिख्या हो, इण वास्तै या बातां नै समभी हो, सरूप: पण महैतो अणपढ हां।

ः म्हें खुद माई कैंग रैयो हूँ के कागजां में प्रजातन्त्र घणूं चोसी मांगू लागै। घोसणावां में प्रजातन्त्र रो की बरोबरी नी, पर्ण ग्रमत में

बात वाई है जकी पैल्यां ही।

(खुस होय'र) बस तो, म्हे खुद भी आय क्य रैयो हैं। सरूप:

भादर : बीच में बात रो ठेगो लगावतो) बात वा ई रैगी लठ रो जोर सदी रैयो है भर लट नैई काको कह्यो है।

महै जी बारै कर्न तो लठ रो जोर है। सरूप भादर : है, जको है। (ब्याय में) बब देखने प्रजातन्त्र सट में है या दूजी ठौड़ है।

मांग् लैर, असो तो महैं भी समभू हूँ, साथ भोळो नी है गर गार्थ सरुप : दिचाळसिगां में रैव् हूँ।

फैट में ब्रायो कोती. नी तो ठा पड़ जातो । भादर : : (बान काटनो) वे भीर देखी, जना बापड़ा श्रीम में महत्री बेव सस्प

रैया है।

(ताव में भाष'र) मेर्ट घना जला ने विश्वादी है। या चाय कोई भादर : दूबो ई बेचैसो 1

(गुम्में मे) तो बा पोन अर्ड ई मिनी बाई ? सस्य

म्हानै तो मगळे योच लागी । भादर स्टारी मानो तो हैं भैम में रीज्यों भी मना । सरुप

भादर : भैंस तो म्हैं पणा जणा रा काड़ दिया, धाजकान नाम ई धो वहं हैं।

सस्प : करो जको भी जाणां हां।

भादर : (पायचा नै घोड़ा ऊंचा कर'र, गुस्सै में तण'र धमकी देवना) काई जार्रों है, घर्स्मुसिर पर चड़ें है काई? दो मिनट में भ्रांपाटिया माफ

वर द्यूंगी।

[गुम्मैमे भादर सङ्यो हो ज्यावै धरहणमान उपनैपक्ट लेवै, बात बचनी देख'र घणां जणा सरुप री दूरान मामै इकट्टा होवण लागे। घात मार्थ हमनो मान'र सरूप भी छानी ठोक'र लाड्यों हो ज्यावें। मागू उस नै याम नेत्री। थोडी ताळ हो-हा हुवै घर गाळी नाडतो भादर बर्डम् चन्यो जावै ।

मरूप गुम्में में लाल होय'र जोर-जोर सूबोतण लागे। मागृमन ईमन थोडी मुळके। माणू रे केवरणू मूं मरूप की मान्त हुवे घर पाछी बैठ ज्याके।

सम्प : धैकरद्वना पाटिया माफ । देग्या ना धानै ।

मागू : (सहय नै घीजो बघावतो) खेर, जाग दे, बुच कोई रा पारिया सार

कर सर्व है। सस्य ं सगद्रा निर भाषा किरै है भर ऊपर सूधून भाने के हैं संबद् हा। दूसरा तो भेड-बकरी हैं। मान

ं घुन रो अब जमानो कठें?

सम्प : पण घैतो, माईसमभः राखी है। साव में क्लै करा सी हुई। की चावा दिया गाव चाली घर स्टारीसामै जडो दोनी, उलानी चाड र्र जावा।

ः माभी कई हुई है।

2.2.4 घर थे बैबो हो, प्रजातन्त्र है, सहला सुनतर है। मोग

भार प्रदानक तो जरूर है पण भीडा सोना से की अनग ही तत्व दर थलग सन्द है।

(पांडी होनियारी दिखावनी) भें तत्त्व-मन्त्र तो में सरद्वा जान 🥕 । बोर भी कड़े मुंबर कड़े नाई से हैं, बाभी डाग् हैं। (मृत हुद वार्व। मायु दूजी काली देलस लाये। की बसा ई स्विटिक कर बायकारी नेवल दुवी ठीड बननावल सार्व ।)

राहु : (शी सोच'र) जर जमा ई गरे बाह्या बरू, भी प्रयानक मी भीगण है। यह कर्न बोर नवारों सा मात्रसा तत्र है को ई प्रवास्त्व केंद्र क मान्त पर बसा पर्व है। ही बोर सावेही कर है-को बो सीहर

भमकी है तो कठ धमण्ड रो नसी, कठ जात-विरादरी री बूंब

तो कई डोका चरावणुं। सरूप : स्वर, ई ढंगरा जोरावर कई देल्या है। ब्राज दुण है जक्षे एव नै राम फूँवै। पर्छ थे बताधी, महें अबार कृण सी बेढंगी बात की। पण भी तो आई कैंबै'के म्हान घड़गी, जकी बाड़ में बड़गी।

माग् : (थोड़ी स्थित नै समभतो हुयो) जोर तो ठाडो ई है—सर्पंद बारे. विधायक आरो घर ओक-ग्राध मन्त्री ग्रांरो। भ तो जती कर-री करावै, वती ई थोडी । सरूप : पण अ आ नमूं मूल के ब्रागलो तो साव माटी रो बध्योड़ो है। योड़

दिनां पैल्यां, से मानजी जी उछळे हा, सोल्या ई' गांव में नोई ने बसण ई कोनी देवां। सदा डेड-बोतळ रै नसे में बोल्या। पर्वें चढ्या वां खांग जी झाळा गीगलां रै चक्कर में, जको मूंडे मूं भान वगा दिया ।

मांगू : (बात रो समर्थन करतो हुयो) हां, सेर न सवा मेर भी निर्त है कैवत कदै भूठी नी हुवै।

जणा ई तो महें थां ने कैयो हो क भी बोट ले इब्या, ई गांव दें। मव तो तीन-तेरा रो राज है।

मांगु: राज है कई ?

सरूप : हां, राज तो बस पायचै अर मूं छ रै बट में आयायो। गरीव री ती मीत है।

मांगू: राज गरीब वास्तै कुण सै दिन हो। हाथी रा दांत दिखावण रा दूग घर लावण रा दुजा हुवै।

िसरूप चाय वणावण लागै, लोग घीमै-घीमै खिसकणा सुरू हुवै। झा^{न्}री

घड़ी में टेम देख'र मांगू भी स्टैण्ड सूं घरां कानी रवाना हुवै ।] (धीमै-धीमै मंघकार)

पैलो दरसाव

दियारा रो बलन । नाव र धायुग छंड इन्द्रश रो महान । मोसी घर भीतरी बैटन । पनंग, सोका धर कृतर । फोन रो कोक्सन भी । दूजी कानी दोस पत्ता मकात, अंक रेमाय आटो पीसण यो पनकी झर दुवी सकात से नाज री योर्या वेरा मूं योडी दुर मार्थं सराव रो ठेको । इन्दरा रो सीर । इस्केबस ई चार्लतो क्षेत्रपत रो पुराण पंची । इन्दरा रो समळो ध्यान पीमो बटोरण घर घापर मतलब में होनियार रैवण री नीत बाळी।

दैटन रै सामै ग्रेन जगी नीमा इन्दर मध्या मार्थकैटयो ग्रापरी दायरी रै मांय को सिसी। भादर धर भावर दोन्यू धार्व]

इन्दर: (दूर गू' देव'र) बावो भाई ।

भादर:(हाय में क्रायरी देख'र) क्या रो हिसाब∼क्ति।व होय रैयो है सरपच

इन्दर: ई मार्थ मार्थ बैटो (मार्चवांनी इनारो करें। भादर घर भावर दोन्यू जणो, मार्चन थोडो सरपचरै मार्चकानी सीचकर बैठ ज्यावै। भाव योडो-थोटो मुळके घर भादर कमीज राबटण खोल लेवे घर घापरी जूती सोल'र पग जन्या मार्थ घर लेवै।}

इन्दर: वी गरमी पड्ण लागी।

भादर : (मत्राक में) गरमी तो भाषर्ग में सदा सूं रैयी।

रन्दर: (इस'र) ग्रांहों, म्हें योड़ी ग्रा कैवां। म्हारों मतलब तो भाई मौसम

भावर: (बात ने साभनो हुयों) बापजो, थारै करने रेवां धर गरमी नी लागे मा वियाहवै ?

हेन्दर: (हा मरनो घर मन में मुळकतो) ठीक है जवान घादम्यों में ई गरमी नी हुवैनी तो पर्छ बाई बुद्धा रै माय हुवैली ?

भादर: यो रामो गरमी मूंई जम रैयो है।

ममकी है तो कठ धमण्ड रो नसो, कठ जात-विरादरी री वृंत्र है तो कठ डोका चरावरा ।

सरूप : सर, ईंडिंग राजीरावर केई देख्या हैं। प्राज दुण है वर्ष प्र मैं राम केंवे। पर्छ थे बताधो, न्हें प्रवार कुण सो वेडेंगी बात की। पण घैतों आ ई केंवें के न्हाने पड़गी, ज़की बाड़ में बड़गी।

मांगू : (थोड़ी स्थिति नै समक्षती हुयो) जोर तो ठाडो ईहै—सर्पंव बारी विषायक आंरो घर अनेक-प्राय मन्त्री मां रो। अँती जती ठड⁴ करावे. वती ईथोडी।

कराब, बता द याड़ा।
सरूप: पण वें आ नमूं, मूर्त के सामलो तो साव माटी रो बच्चोड़ी है। सी
दिनां पैल्यां, ये सानजी जी उछळे हा, बोल्या हैं गांव में सी
वसण हैं जोनी देखां। सदा डेड्-चोतळ रे नसे में बोल्या। हुई।
चद्या वां खांग जी प्राळा गीयला रे सक्कर में, जको मूर्ड हुँ ^{प्राप्}
वगा दिया।

मांगू : (बात रो समर्थन करतो हुयो) हां, सेर ने सबा मेर भी निर्ने हैं कैंबत कदें भूठी नी हुवें।

सरूप : जणाई तो म्हें पाने कैया हो क भी बोट ले डूब्या, ई गाव^{है।} भव तो तीन-तेरा रो राज है।

मांगू: राज है कठै?

सरूप : हां, राज तो बस पायचे अर मूं छ रै घट में आयग्यो । गरीव री जी

मौत है।

मांगू: राज गरीव वास्तै कुण सै दिन हो। हाथी रा दांत दिसावण रा दूर्ज भर सावण रा दूजा हुवे।

[सरूप चाय बणावण सागै, सोग घीमै-घीमै सिसकणा भुरू हुवै। ब्रा^{हरी} भड़ी में टेम देख'र मांगू भी स्टैण्ड मूं परां कानी रवाना हुवै।]

(धीमै-धीमै भंघकार)

भावर : (हां भरती) हां, मुद्दी ही ।

इन्दर: महर्तमी गदिन नुसारी यो भाई मिन्सी बर यो म्रांजागीरदः रास टसका बनाया। महार्ग धेक ई' दरकाम में मुळजी री पिथी वस्तरी ।

भादर : मब तो मो पिरपी कर्ने उठ-बैठ करे है घर यारी करे है बुराई। काल परमानी ने भड़कायों के स्टैण्ड मार्थ तु भी मारी घड़ी रसले । जनो आर्थगो. यी नै देश सम्या ।

इन्दर: वी बगन पिरधी भी हो बाई ?

भादर : पिरवी तो कोनी हो पन उन्न नै वही धाई के पिरधी धापरी

कांनी है। इन्दर: समभायो। भेदर : किया ?

इन्दर : ब्रारी सप्पा-टुवको जाणुंहुँ। यो बापड़ा बामण कर्नामू पंचास रिपिया निया बनावे हैं। कान मैरू जी रै मिदर सामै पीवा-परी हुई धनाडै ।

भेविर : जणां यारा मूंकाई छानी है।

इन्दर: महें तो ग्रांसयळाने जणूं हूँ। ऊपर सूंबाना घर घर में नागा। भादर : ई पिरयों ने भी थोडो जचावां जणा पार पर्डे । (योडो अठीन-बंडीनै देख'र) यांने ठा है मळजी आळी जमीन सगळी दाबसी। भान

जी मैं गुंठो दिखा दियो । इन्दर: किया?

भादर : बुवै मार्थ विजली बैटाई जला वी रो सीर कर्यो हो । भानत्री भोलो हो, पीमा भी दिया घर आज बांटा ताई तरमें हैं।

इन्दर: भानजी ने कैदों क ब्रायणा मुं मिली। विरुवी ने तो इत्यो पनावृती के तीन तित्रोधी दीचती। (मरपवरी दात मुत्र'र साबर पण

सम हवै । भादर : तो, धव की भावर री भी गुणी।

इन्दर: बोलो। (भावर भादर गांनी देलच तान जारे)

भादर: ग्रव मुणाय। भोदर - बात मा है के अंब तो इस में स्टेब्ड मार्थ पट्टी चाइने, मो भी भावर : (भादर सं) धव थे ई वैदो ।

मापरी चाय-पानी री दुवान करला थावे। दुशी क्षान माने ईरे

इन्दर गरभी चावे धार्ट ।

भादर : पण गरमी मूं के मालता भी ही रैया है।

इन्दर : होणदे, इया ई राष्ट्र रोबंगी धर ईयां ई पावणा जीमैगां।

भादर : सैर, बापा तो कोई साछा री परवा करां कोती।

इन्दर . परवा घर आपा । आज तो काची स्यायो नी ।

भादर: (नटक्तों सी) स्टैती कैवं हैं। बाकी ये भी जागी ही।

इन्दर: बाज तो तू कैये जका नै जजाडदयां बरत् कैये जवा नै बताद्यो। भाषस् राज है।

भावर : (हामळ भरतो) घा तो टीक है मरपंच माव।

भादर : भाई सरपच है सरपच । भैं मेले भर एस. थी भी भागर इलाहे नै पुछ'र काम करें। राज री जड़ तो सरपंच है।

भावर : जरूर है सा । मानबाद्धा री बात तो मानधी पड़सी।

इन्दर: (प्रसग नै बदळतो) पर्छ मास्टर जो रो की सुणी काई ? .

भादर : बब काई सुणनी है। गया बार के भाव में।

भावर : (भवरज मुं) मास्टर जी बुण ? भादर: स्योगल जी।

भावर: काई हुयो ?

भादर: तन्त्रे ठा नी । चुणाव री बसत पसवाडा फेर'र चात रैमा हा । में बोट जर्बंगी जर्क ने देस्या ।

भावर: बोडा ब्रह्म ना।

भादर: काइदी ना धकड़। सरपंच साव दाळ दिया टमकोर मांकड़े। [हरी

हसण लागे) घर घव तू देखने अकड़ घणां नतां री निक्य जाती। इन्दर: (योड़ धीमें सुर में) मकड़ की री ई नी छोड़ा, सर्पंत बना की बास्ते हो ?

भादर: में क तो ई मुळजी रो भी चांचरो सूज रैसो है।

इन्दर: मळजो ? भादर: पैताद जी आछी।

इन्दर : बरै छोड़ ई' मुळश्री नै ८ 💏 चटको दिखा दुर्द[†]। भादर: म्हारी माने ने इंच ई

इन्दर: त **

i बाजी बनीत नै आहा ांच कर र उपने द्वराहरी भोबर: (हां भरतो) हां, गुणी ही।

इन्दर : स्हर्त सो हिन मृतारी से भाई मिल्यों अर बो स्रांशागिरवासा स टमका बनाया। स्टारी स्रेक हैं दरकाम में मूळवी सी विधी क्यारी।

भादर: धव तो मो पिरथी कन्ने ऊठ-वेठ करे है घर बारी करे है बुराई। काल परमानी ने भड़कायी के स्टेण्ड मार्चे तू भी धारी धड़ी रखल। जको बार्चेगो. बी ने देख लेखा।

इन्दर: बी बगुन पिरधी भी हो काई?

भादर : पिरची तो कोनी हो पण उथ नै कही द्याई के पिरधी द्यापरी

कांनी है। इन्दर: समभ्यो। भादर: किया?

रापर : क्या : इन्दर : ग्रारी लप्पा-इबको जाणूं हूँ। वी बापडा वामण कर्ना सूंपचास रिपिया लिया बतावै हैं। काल मैक जी रै मिदर सामै पीवा-चरी हर्द

भीवर : जणां बारा मुं काई छानी है।

ঘৰার ১

इन्दर: म्हेतो श्रांसगळानै जणूहै। उत्परसूवामा श्रर घरमें नागा।

भादर : ई निरधी नं भी बोडो जचावां जणा पार पड़े। (बोडो अठीनें बडीनें देख'र) बार्न ठा हैं मूळवी आळी वभीन समळी दावली। भान जी ने गंठो दिखा दियो।

इन्दर: किया?

भादर : कुवै मार्थै विजली बैठाई ज्ञण थी रो सीर कर्यो हो । भानजी भोली हो, पीसा भी दिया ग्रर आज थांटा ताई तरसे है ।

इन्दर : भानती नै कैबो'क स्नापणां मूं मिलं। पिरधी नै तो इस्पो फसावूं भी के तीन तिनोधी दीवती। (सर्थन री बान मुत्र'र अध्वर पर्स

सुम हुवै। भादर: तो, ग्रवकी मायर री भी मूणो।

इन्दर: बोलो। (भावर भादर कांनी देखण लाग जादै)

भादर: भव सुणाय ।

् (भादर सूं) धव ये ई केंबो । ्रात मा है के बैक तो इस नै स्टैण्ड मार्थ पट्टो चाइने, धो भी . चे बाय-पाणी री टूकान करस्युंचार्व । टूटी बान धांक ईरिं

(32)

इन्दर: गरभी चाये भाई।

भादर : पण गरमी मूं के बागता भी हो रैया है। इन्दर : होणदे, इयां ई रांड रोवेंगी ग्रह ईयां ई पावणां जीमेगां।

भादर : खैर, प्रापां तो कोई माळा री परवा करां कोनी । इन्दर: परवा धर आयां। आज तो कांची स्यायो नी।

भादर : (नटरतो सो) म्है सो कैव्ं हैं। बाकी ये भी जाणो हो। इन्दर: बाज तो तू केंग्रेजकानी उजाड़दयां भ्ररतृ केंग्रेजकानी बसाद्यां।

भाषण राज है।

भावर : (हामळ भरतो) झा तो ठीक है सरपंच साव। भादर: भाई मरपच है सरपच। अभिने घर एम. पी भी बापर इलाके मै

पूछ'र काम करै। राज री जड़ तो सरपंच है। भावर : जरूर है सा। मानवाळा री वात तो मानवी पडसी।

् इन्दर: (प्रसग नै बदळतो) पर्छमास्टर जी रीकी सुणीकाई ?

भादर: ग्रव काई सुणनी है। गया बारै के भाव में।

भावर : (भ्रवरज सूं) मास्टर जी कृण ? भादर : स्योगल जी ।

भावर: कांई हुयो ?

भादर: तन्नै ठानी। चुणाव री बखत पसवाड़ा फेर'र चान रैया हा।बो

बोट जर्चगी जर्क नै देस्यां। भावरः बोळा धकड्या ना ।

भादर: काढदी ना धकड़। सरपंत्र साव ढाळ दिया टमकोर सांकड़ी। (इन्

हंसण लागे) घर घव तू देखजे अकड़ पणां जिंगां री निकळ ज्यासी। इन्दर: (बीई बीमें सुर में) सकड़ की री ई नी छोड़ा, सरपंच बच्या क बास्ते हां ?

भादर: भ्रेक तो ई मूळजी री भी चांचरो सूज रैयो है। इन्दर: मुळजी?

भादर: पैलाद जी आळो। इन्दर: ग्रर छोड़ ई मूळती नै तू कैवै जणा चटको दिखा दुवु ।

भादर : म्हारी मानो तो इण नै चटको दिलावो ।

इन्दरं: तू केवे जद ई। गैन ने तन्ने ठा हो, मुनारां भाद्री जमीन में आप बाई ही । सुनारी बापड़ी मापर पीर में रैनी । मूठ-मांच कर'र प्रकर् दियायो । सठै सा'र बम जागीरदार बणग्यो ।

भावर : (हां भरतो) हां, मुणी ही ।

इन्दर : म्हनै में कदिन नुनारी रो भाई मिल्बो अर बो मांबामीरदारा ग टसका बताया। म्हारी में कईं दरताम में मूळजी री थिथी यंगरी।

भादर : प्रव तो को पिरयों करने ऊट-बंठ करें है घर बारी करें है बुराई। काल परभानी ने भडकायों के स्टंण्ड मार्केतू भी बारी पड़ी रखते। जको आवितों, यी नेटेख तेल्या।

रलगाणका आवगा, वान दल लम्बा।

देन्दर: वी बगत पिरधी भी हो काई?

भादर : पिरची तो कोनी हो पण उन नै नहीं धाई वे रिज्धी धारणें नांगी है।

इन्दर: समभायो।

भादर: किया?

दैन्दर: मारी सल्या-कृषकी जालू हूँ। श्री मापका बामण कर्मा मू प्रधान रिविया निया निया निया है। बान भैंग जी रे निवर मामै वोका-कर्म हुई

यरां लार में क बाहां है जका रो गैलो सदा मूं समस्य जी प्राठी कोटड़ी रैं सामें मूं गयो है पण अब काल मूं वो गैलो बन्दकर दियो । इन्दर: कृण ?

भावर : वो समस्य जी बाळो भोपाळ । इन्दर: पण वयू ?

भावर : ठांडमदाई। भादर : वो कहाो बताव है मठ घणां सरपंच हैं, तू सोच रचालजे ।

[भादर धर भावर री वात सूं इन्दर सावचेत हुयो । उणनै लक्षायोंक कोई चण रै मार्थं सीधो हमलो कर्यो है। ईंबीच जसजी चाय लेय'र आज्यावै। तीवृं जणो माप-मापरा कप उठाय'र चाय-पीव । योडी ताळ साव चुप्पी । भादर मर भावर सौचै स्यात सरपंच साव ई समस्या रो उपाय सोचता होसी।

इन्दर : (धीरज बधावतो) डरएँ री तो कोई बात नी है। भोषाळ नै स्योगात रो ठां नी। सरपंच रा पावर म्है जाणां हा। इया तो म्हान कोई भी डरा सके हैं साज राज ठाडमदाई रो नी, कानून रो है बर कानून कांई है, म्हे जाणा हां। सारली साल गांव में डाग बाजी ही, वै सगळा अब पेसी सुगता रैया है तो भाई मा रो उपाय म्हारी करने है।

भादर : ग्ररणे ठाडमदाई सूंई गैलो बन्द करैतो आपांभी भोपाळ सुं सवाया हो। ग्रठ तो जको रैसी, वी नै सरपंच सुं रामा-स्यामा करणी पड़सी। महैं तो सीधी झें क बांत जाणू हैं। इन्दर : (भावर कानी देखतो) वस, बात तो मती ई है, करमी जको ई रैसी वै पटवारी जी तण्या, जको बड़बड़ मुवार्ए जाता ठैस्या, वो वाटर-वर्क्स घाळो होलदार लाडसाव बण्यो तो रात्यू रात गया, सामान भी दुजा ई पुगायो घर जद चन्दरो साइनमेन मिनिस्टर जीरी एस

दिसाई तो महै वी रो फटाफट कनेक्सन कटा दियो । ई वास्त में गाव रा दिघाळॉसग जी तो म्हारा देख्योड़ा है। (मन में खुम हो तो) ग्रजी ये चाया, काई नी हुवै। भावरः

भादर : मतलब वी नै महैं जवांबांगां । ऊन से गुरू जून । ई गांव .

इन्दर: तो भाई, वस-स्टिण्ड तो लठ शाळो रो है। तू भी घडी क्रकाले

ग्रावैगो जकानै देखांगां।

में कई वेल रातूमड़ाईं।

इन्दर: भोपाळ नै ग्हेदही रै माय चूर'र देश्यां। (स्द हरूण लागे।

भावर: अत्ती मेहरवानी हुय ज्याव ती बस पाव ई वाई? मावर भी यागे ई समभी। प्राधीरान ने भी हेलो देखो, तो डाग लिया त्यार है।

भादर : पर्छ म्हानै चाये ई काई ?

भावर : न ई, भीर भी की भाग चावों तो महैं.......(जेत में हाथ देवें)

भादर : हां हा, ठीक है। मौको जाणजै, कर लेखां।

िन्दरों मार्च मूंबर्ड घर भादर ने थोड़ो घलग से बालग रो इमारो करें। भादर भावर ने 'थोड़ों टेर' कंध'र इस्टरा रे सार-सार वालें। दोन्यू पड़ीक बल-हार्के। बात कर'र दोन्य भावर कानी धान्यार्च }

इन्दर : तो श्रीक जणा।

भारर : टीक । बी ने स्हे (इसारो कर'र) देल संस्तू । मानै जला तो टीक दे भीतर प्राप्त करने पणी ई उसाय है ।

दन्दर: (बोडो हमण लागै) हां, माल्यो भी भी नान-नवर बसी करें है ।

भारर : (रंग दिलावनो) वो रो मोर्र भी उनार देन्यू । रेन्दर : (ब्याय मे) या सोर्ट पता रे आवण लागी, चवनर वार्ट ??

रिन्दर : (ब्याय में) ब्रासोर्ट पणा रे आवण लागी, वश्वर वार्ड है है भीदर : के तो आंडोफोरी परवार्ड सन वारों श्रेती क्यार में हो हाउ से

भेदिर : धेतो आंदोशो दो पत्वार्दमन वर्षाः कोई बाटा नै के काठ से मुदादेव्यूं।

[इन्दर चर भादर दोन्यू हमन सार्वे सार्वे भावर भी।]

(धीवे-धीवै अधनार)

दूजो दरसाव

[सिडमां रो वपना। मोटड़ी रो मट्टो। वो स्वार जणां बैठ्या बढडाई।
विजळी नी होमण रे कारण गर्ट्ड मार्थ घण क्षांपारी। रंगू रावळा मूं तुळछां रा पना लेप'र येगी सो मिदर कानी जावनां। मांघर 'घर मोड' कैम'र रंगू मूं बननाई, पण रंगू 'ध्वार मी' कैय'र येगो चल्यो जावे। साबयोड़ी घर मार्थ लकड़ी री भरीटी साम्या पनजी गाया नै टिचकारतो गर्ट्ड रे सार्र मूं निकळ । रावळी में बिरबू घापरे येटे ग्रमोक मैं जोर-जोर मं हेला मार्र।

सायर, हणमान ग्रर मदन भी उठ'र श्राय-ग्राप रे घर चल्या जावै। गर्ट रे ग्रीडे-छेडी फेर्स गुग्याड़। फिरमिर भरतो ग्रांशरो।

प्राठ वजरों में पाच मिनट री देरी। मांगू प्राप घाळो ट्रांबिस्टर सेव'र गर्ट मार्थ थेंठ ज्यार्थ। गयोड़ी विजळी रै प्रावण मुंगांव में हाको हुवै। गर्ट्ट रै मार्थ मदरी रोसनी रो जजास फैन ज्यार्थ। मांगू पड़ी मार्थ निजर टेक'र बी. बी. मी. संदत मुंखर सुणने वास्ते ट्रांजिस्टर री गुर्द नै धुमार्थ। प्रस्ते में खबर प्रावणी गुरू हुवै। मागू घ्यान मुंखदर सुणी। छंडी रात प्रर एवरा री गूंजती प्रापान।

पुरू हुन निर्माण प्रसान पूर्वियर सुर्ण। ठडी रात ग्रर र सवरौ रो सोकीन सौबत साताई सूंगट्टै कानी ग्रावै।] सौबत : कोई सबर ग्राय रैयी है भाया?

मांगू: सवर सुणो। [दोन्युष्यान मूं खबर सुणण लागे। डकार लेबतो सायर धार्व।

ियालू घ्याने मू खबर मुणण लागे । बकार लेबतो सायर प्रावे। चुपचाप बेटर प्रवर सुणावा लागे । प्रते में बीड़ी गीवतो प्रर नर्ते में गैळीज्योड़ो सो पिरबी आर्वे अर 'जे गोपीनाय जो' रो कर'र बैठ ज्यावें ।]

पिरयी: मटी बी. बी. सी. बोल रैयी है।

सांवतः हूँ।

मांगू: (मन में मुळके घर विरसी री नहीं में तिरती द्वारया ने बंग्य है देखतो हुयों) द्वा थी. थी. भी. है।

पिरथी: जा लपोड़, म्हनै काई ठानी। न्यू तूर्ई घण पुटम्यो काई?

मांगू: ग्री हो, म्हें कद पढ़ाई रो गुनान दिखायो । म्हं तो कैय रैयो हूँ क

भाबी बी सी है। यी: क्यूं, महैं काई नर्स में हूँ। स।वतः (योडो हंम'र) जदई तो नैयो।

निर्यी: महै भाई, महै तो नमें में घर थे स्थाणों। पण कद रा स्थाणों।

र्मागृ: देल्याजद मूं।

पिरपी: ग्ररै बाह ! लागमा जोता । आं पडेगस्मां मूं तो लाई पन की ई योगो जको गाम चरावै ग्रर नेजो गावै ।

सायर : ग्रहे भाइड़ा चोगी रोळी करी सबसे से । बंद कर ई रेडियो ने । [मांगू ट्रांजिस्टर में चंद कर देवें ग्रह पिरधी कानी देल'र हसण सार्थ]

पाय] रिरथी: (मजो लेबतो) ग्ररै क्यूंदात कार्ड रांडघट्टा। (मागूफेरू मी हसणलागै)

सावतः भाषा मुणली लबर। ग्रव ग्रागैरी लबर ग्रा मूं सुणो।

पिरथी : म्हारै मूं ?

मोदत: हाथारै मूं। की अब थे मुणाबो । बी. बी. सी. तो पूरी हुई ।

मांगू: ना, ग्रैभी थी. थी. सी. मूंकम नी पड़ै।

सायर: मातो ठीक कही भाइडा।

पिरथी : धरै बबू मूरख बणावै यूंगानाय । म्हें कार्य बावळो हूँ, सेर धान साबू हूँ ।

मांगू: बणाव मुण, आज तो लोग खुद पूंगानाथ बण है।

रोदित: ताभाया, या बात गळी कोनी उतरी। टेम मार्थ हरेक प्रयानाय बर्णा।

सायर : गरजचीज बडी है।

सोंदत: टीक वही भाषा। आज गरज री की सर्दहै।

मांगू: (हाभरतो) हा, गरज मूं ठा पर्द के बाकी है।

सीयर : पण गरज राभी तरीका बदळाया। गरज मारू धैहा-धैहा काम करणा पढ़े के भन्ने मिनस ने केवना ई सरम धार्व।

मांगूः रस्य घर सरम दोन्यू अंके सार्प निर्मे कोती । सापतः हा, गरम राक्षो घय जनाता रैया कडें।

धारतः हा, सरम राक्षो झब जमातारेबा व

सायरः सरमक्यासायकाई?

सींवत : ई बार्स्न ई, नी तो नरम रैंदी घर नी रही घरम ।

मोगू: धरम तो चंदो है बर घन्ना में नरम दोनाई नी ।

सीयत : धरम काई, माज तो बादमी हरेक चीज नै धंधी मानै । उन रै मीव धर चिनन में ग्रतो बदळाव शायग्यो'क यो हर चीज नै नर्फ-नुक्सान री तालड़ी मार्थ तोलें। उण रा भाव बर विचार समूदा पेट ग्रर पेट री पूरती मूं जुड्योड़ा है। घरम-घ्यान ग्रर दान-पृथ्य तो अवि ग्राड़ है, भोर्ळ मिनल नै मळावणी देवण मारू।

मांगु: हो, ग्राज तो ओ ई होय रैयो है।

सावत : दिलाबी पैलां मूं घर्मा बढयो है बयु क दिसाव रा साधन बद्धा है जमान मुजय । हो ई कारण है क धरम झव आस्या नी मनोरंजन है। अजीय सोक है।

माँगू: ग्राज रौ आदमी मनोरंजन चावै। वो धरम मैं भी मनोरंजन री शीवा सांग्र है स गेली।

सांवत : धर घरम रा ठेकेदार इस्या'क की वै की ग्रर करें की ।

सायर : भाइड़ा, ठेकादारी है ई ग्रंड़ी । लोग टावरी पाळ ग्रर घरम हलाळे ।

मांग : रूपाळी जकां नै दुनिया जाणी है।

सांवत : दुनियां तो भाई की ई नी जाण । वा तो बापड़ी पलदारी करें। जठै जिस्यो बोभ उठाण् पड़ै, उठावै ।

मांगू: पण दुनियां नै पलदार मान लिया, भा बात भी ठीक नी।

सायर: पलदार कत्तो'के बोक मरसी।

मांग : जठ ताई पेट है।

सायर : पंटतो कुबो है।

सांवत : पैलां पेट कुबो नी, अक रोटी री जगां ही पण भव तो भी भरे नी

मांग : गुवो रीतो है या पाणी मूं भर्योड़ो।

सांवत : पाणी करें ?

सायर: जणाइण नै कुवो भी किया कैवां?

मांग : भग ई चक्कर में जावो ई मता।

सायर :

पण जीयतै जी नै मंडको तो देण ई पडैं। (योड़ो पिरयी कानी देख'र) बर छोड़ो ई चरचा नै, अपा ती सांवत : पिरमी मूंबतळास्यां। भ्रीजदको सोचै है 'क आंफालन् बानां ^{में} पहुंची काई है ?

पिरथीं : (इंस'र) म्हनै तो भै बातां साव फालतु सागै।

मायर - नो भाइडा नूनो गाव री बात कर।

पिरयी: गाव शे चारै मूं काई छानी है।

सायरः क्षेत्रो वस सुषा-सुषा हा ।

पिरथी: पे मुणो क्यूंनी। बारै भी की हाय बावै है।

सागु: बारेवाई बावे?

पिरमी: म्है, सीदो सेव । म्है तो ज्यालूंई गांव रैवूं है नी ।

सींतन : (योहाधीता मूं) इंया है रैंक क्यों समझ्यों नी क थारी सतलब

नाई है ?

पिरथी: म्रोनो नी समभै पण, स्है समभू हैं।

सायर: फेर्म भी बनादग् भाये।

पिरयो : बारो बेटो वृदद कमावै अर यांनै ठानी हुवै, घाजचै कोनी।

मांगु: कुबद तो स्टर्न ये भी कम नी कमाबो ।

पिरयों: (गुस्से में) महें की राटापराफूंक दिया? स्रोवन : टापरामे तो सोग रैंवे हैं, फूकण कुण दे?

सोंगू: पण बाहै कठै?

सायर : देस भाइडा, जे तुम्हारा भाइर री कैंदे तो घेक बार नी पाथ बार भैंदा । है तो बी रो नी धात्र सगी तो नी काल सगी : विया तू कैंदों के हो याब से रैंदूं हूँ सो हुई भी बर्द नी रैंदूं। छानी म्हारें सूं भी की है नी। तूं भी खुद ने काई नमफें है, आ महें भी चोशी तरिया जायुं हुँ भर तेरा कारनामा भी याव मूं छाना नी।

पिरथी : (हथेळी री बाबी मार'र) बानै दुहाई गोरीनाथ जी री, जे सांबी-

साबी नी कैंबोगातो ।

सांवत : अरै छोड भाई।

सायर : म्हें तो मुणी जनी नैयन्द्रों। म्हर्नकोई कर लागे है। म्हे भाषका, म्हारा नेटा राई सीरी नी। साथा तो साक जाणा—करोगी सी भरेगो। पण तुं पूंत मूं जकारी जमीन दाई पर जकां नैयन करेर माणां-तिसील ताई ने ज्याई, मा नोई चोली जात है।

पिरथी: की नै लेखो?

सीयर: दी रामलाल जी बाल टावर नै।

पिरथी: रामनानजी?

सायर: जुंबारजी भाळो।

पिरशी: पण वै श्रर थे स्याणा घणां ना ।

सायर स्याण तो भाइड़ा महनै ई गांव में दोरी ई मिलै।

सावतः

बस काळ पडग्यो कांई ? मांग : काळ भी पड़ग्यो ग्रर की स्याणां री ग्राज जरूरत भी लोग क

समभौ। महारै स्वाल सूं धाज भी ब्रहै स्वाणां है पण पूछे कुण ? ग्रब तो धीगामस्ती रो राज है। सांवत :

स्याणा माळा फेरो या मैस चरावो । श्रव तो लठ री पूजा है। मांगु :

लठ री पूजा तो सदा सूं रैयी। पण याज लठ गरीव रो सारो नी। सावत :

यस लठतो लठहै। मांग् : पण लठ भी लठ कद तांई रैसी ? आज तो हाथ नै हाथ ताव है! सांवतः :

पिरथी: सांची आ है, थे कताई सोची अर फालतुरी बहस करी। म्हारी तो इयां ही वाण चालसी । लुक-लुक'र तो ब्राज घणां जणां वार

करै है पण बै चौड़ा में क्यू आबै नी।

गरीव कद चौडै में श्रायो ? सांवत : विरथीः क्यं ?

डर लागै ज्युं। सावतः

पण भाइड़ा नागाई कोई री ई हुवै, लाम्बी नीं चाले । रावण भाष वै सांधर: कांई मानतो ?

जणां थारै कैवण रो मतलव महै रावण हो। पिरथी:

द्यातो कैवण री नी समक्रण री बात है। मांग :

पिरथी: (हंस'र) जणांगई मैस पाणी में। घणी रोसी, आपण् काई विगड़ है। सांवत :

घरै, घणी ई तो मरग्यां भाइडा। सायर :

(उठनो हुयो) ल्यो सूण लियो बी. बी. सी. । ग्रब चालो । सावत :

[सगळा उठ'र भापर घरां कानी चालै]

धिमें-धीमें भ्रधकार]

तीजो दरसाव

[मूर्व रो बगत । ग्रामली रै गट्टी मार्थ मोगू बैठ्यो-बैठयो दातण करें । हवा रों ठंडो भवको ग्रर ग्रामली री मीठों छोया। रंगुरों टोकणी सेय'र कोटड़ी कानी भावएं। मांग उठ नै टोक लेवै]

मागु: घो रंगु माव-माव।

रंगू: (पग थोडा यांभ'र) काई लेख्या तेरै वन ?

भांगु: क्यूं?

रेंगू: (योडो मांगू कानी चालतो) बोड़ी सो तुंपीव नी धर इसा म्हारो टेम कटैनी।

भांगू: धातो जाल है पण योडी ह्याई करी।

रेंगू: भाषा महते हवाई कर्या किया सरे ? घरा टायरी वाई नागी ?

मांग् : टावरी तो सगळा रै है।

रेंगू: सगळा रै तो है, पण महै तो म्हारी केंबू कि भागतां भागता ई पेट महै कोती । रंगू मागू रै मारै बाय'र बैठ ज्यावे बार बायरी जेव मूं बीची काड'र मिळगाएँ री त्यारी करें) दनिया दिया काम चनावे, म्हनै तो टानी।

मांगू: इनियां तो भाई, नी तो भागै घर नी जागै, इन मोई घर लोई।

रंग: तभी मजाकतो परी करें है।

मांगु: देखते ई गाव में ई।

रंगू: दीवाव को लाबों तो मणद्रा मूं न्याको है। महै लो इन्यों बाब

टेक्बो मी १

मागू: संर, गाव तो सै वरोबर है। साहबा सन्द्री चार्त है। र्राः दी गत में तो हवा कड़े अ'यो चर्त्त है बड़ी क्लेट्नै टिक्स दें नी दें।

मागू: बर्ड तो बाधी'र स्टतो बर तूंटो लोब्डू बार्व ।

रेंगु: हा, मो रूपक सावो है।

मागू: यस रगुरुई लार्द के चार्द्रोड दव में करोई दिनारों, दी रे नार यो बढ़े मुंतिबर्द्ध ?

्रंगू: मर्ने भव तो दूप भी कठै भव तो पाणी मौय मूं भी काइ रैया है। मोग : भोलव है।

रगूः मो भी समळा में नी।

मांगू: सगळा में हुया तो घोलम चाल बर्छ।

रंगू: (बात ने बदळतो) पर्छ वा मस्ती ऊंटा रो कांई हुयो ? मांग्: (हम'र) मछ्या, वो ऊटा रो !

रंग्: हां।

मांगू: ईंगाय में तो मस्ती, ऊंट, सांड मैंसां घर घम्मर बकरां चादी है।

रंगू: काई कर्यो जाय? लोग मरम मरम में दिन गुजार रैगा हैं। फेरू भी नागाई कोई चोली चीज नी।

मांगू: कोई बताऊं रगू? यारी दया मूं म्हें दो मांक सीख'र दुनियां थोड़ी समभी, की किताबा म्हें पड़ी भर की लोगों रे सम्परक मायों तो ठा पड़्यों के राजनीति रो नसो खोटो पर्यू है। रंगू: हां, नमा तो, से खोटा हुवें, पण भ्रो कलजुगी नसी है। ई रो प्रभा

सगळा मूं घ्रानोस्तो है। मांगू: जका रै, ई रो चसको लागम्यो, बो घर मूं तो गयो।

रंगू: धर मूं तो कोनी गयो पण घर से क्षाको बटळ दियो । राजनीती पाणी मूं तो केई जणा हिड़कस्या । मांगू: हो, ठीक है म्हन तो लाग क हिड़कस्या घर भिड़कस्य में दोल्यू गत

राजनीती मे है। पूळ बाबो, भाटा फीको घर भोभर उछाळी--घो राजनीतो रो खास काम है, पछ नेता भी चिलम पियोड़ा नसाबाड से तरिया मुंबार साल रंग, योकारा किरकाट रो नाई घर सिमा मूत रो नाई रंग बटळें।

रंगू: विया तो काई नेता अर कोई नांगळा ? मांगू: वै तो खैर श्रोक ई है।

नापु विशिष्ठ स्रोक ई है। रापु : ई साव में देख | नी तो कोई नेता सर नी कोई नांगळो पण

स्रोवस्योदा इत्याक मार ई नासा। मांगू: ब्राईतो समक्तरण री बात है। ब्रांमें फूक भरीज री है टेट दिली

- रेंगू: देन मांगू, रुट्ने ईंगाब में टोक्जी फेरना पैतीम बरग होग्या। रहें पर्ट पोशा-चोना प्रर भना धादस्यां ने देग्या है (प्रापक्टी पर गिणावतो) गादूळ जो ठाकर, गेमो बाज्यो, भातीबक्गजी जोसी धर स्थोपंदो बळाई '''(घोटो ठह'र) ई गाब रा लोग दूवे गाव में पंचारत करण जाबता, पण धात''''
- मांगू: धात्र तो धैयात मुणां तो विस्वाम नी हुवै ।
- रेंग्र : माज तो हाथ में तत्वरार मृत राखी है. अब बाप जी इस्या मूं हुण नो भिर्मे पर कुण दुनमणी मोल लेवे। बाकी बावश दुजा तो बिना हड़दी रो नाग सावधियां है। बानें ठा है—णोह ने मुक्तमा में फनायों हो जनते नाज रो तो लाई पाणी रो मुबाद मूलायों।
- मोंगू: हां, मुत्रको तो भावभी जद लाई जट ती रा दिन माडा प्रार्थ। बुद्धिगढ़ जी देताल रो मुक्तमो लारता तीम बरत मूं पाल देशे हैं। बुद्धिमह जी तो भागल परांग गण प्रमल री डडी बेटा-गोना ने गुवाग्या ध्रव में बेटी जो भ्रर मुक्तमा लडी। मुक्तमा रें चलकर से बनवारी रा टावर रूळन्या। वो आज बावळो वण्यो गाव में किर्रहै।
 - रेंगू: मांगू, मुक्दमा स्रोटा। मांगु: पण भाई मुक्दमां मूंदुजा भी
 - रोंगू: पण भाई मुक्दमां सूदूजाभी पळै। धाणादार, वकील, भ्रर जजभी सो बाट उडीकै। अंक रो दरद, दूर्जै रैंदरद रो इलाज करै।
 - रंगू: (हंमण लागे) ग्रातो टीक है।
 - मानू: चौनानो मुरू हुवै जला किसान राजी हुवै बहु 'क लेन मे भाग निगजरों री प्राप्त वर्षे । दुवै कानी बसील भी चौनाता से हरल मनावे बहु 'क मीन-डोतों नै लेगे'र केई सोगा रा चावरा फूटै। ई बार्स वोई राष्ट मूं डेंदों कोई राष्ट्र री उडीक करें।
 - रंगू ; दुनिया है—सजब रंग धर अजब ढग। संग्रा : भी को सोल को सर अजब ढग।
 - मांगू: महैं तो सोचूं, ओ एक तमासी होय रैयो है।
 - रंगूः तमामासूं लोगपेट भर रैया है।
 - मांगू: (बात बढळनो) स्रेर ग्रीर मुणाय गाव री नात्रा सबरां।
 - (हमण लागे) रेंगू: खबर तो तेरे मुंबाई छाती है। हाँ, महते बना टेस कार्द होगी (पटी कारी देखन लागे) हास टोक्ची से पाव बाटी बामी कीती। काम किया जातनी?
 - मांगू: बयू मरपचाई रा ठाट देस्या नाई?

रंगू: देल भाई ठाट तो महें जालू नी, पण मणळा घापर पेट नै दोन री तरिया पीट हैं। कोई चोड़े पीटे तो कोई मोलो लेय'र। मैं पृ काई है ? मांगू: हा, पट्टा रो मतलब पट्टै पर पट्टी, फेरू पट्टा नै जेब र मांब धार्तर क मेड़ी ताई घूमता रैयो । जद ताई फैमली होसी, सरपंत्र गारर रंगू : (पोडो धीमो मुर लेवतो) लोग भादर री सिकायत भी भाग ताई करण् चावै। मांगू : मिकायत कुण करें है ? किण रें दोय सिर हैं —नामा-चूषा-में दू ऊँचा। पूरा माव ने मद कर राख्यों है। गरीब रो तो रेवए मुस्किल है। कानजी री बीस बीधा जमीन आडा-तैडा कर'र भादर खुद दबाली। मुकदमो भी चाल रैयो है पण नागां नै जीते हुण? कान्न री स्थित विचित्र है। रंग् : ग्ररै भाई कानून ग्रर स्थाव है कर्छ ?

मांगू: नानून भी हमेशा अपराधी रो साम देवं।

रंगू : हां, तो सगळी जगां तळवा साग खाबाळा बैठया है। मांगू : पण अपरा बर्ड तो मुंछ रो राज है। मुंछ मार्य बट रैवणू चाइन । रंग् : पण मां री मूंछ कटवा भी कुण सकें ?

रिंगू टोकणी हाय में लेय'र खड़ यो होय ज्याव अर चालण री त्यार करें। सामें सू सांवत बावें घर रंगू सावत री बाड़ लेय'र चातएं वास्तै कैवे । सावत श्रेकर हाथ पकड़ र रंगू नै बैठावण री कोसिस करैं। पण रगू बैठै नी] रंगू : ई गट्ट मार्थ तो ग्रेक आसी धर एक जासी। म्हर्न पणी उवार होगी। (हंस'र) पर्छ स्यामण रोळा करें ? (सांवत कांनी देख'र) थे तो बापजी पराम चौके जीमो हो। सांवत:

म्हांने कुण पोय'र घाले है। रंगू : (मजाक करतो) भ्रा तो हिम्मत होवणी चाइजे। हां, हिम्मत बाळा ई गांव में राज करें।

(बीच में ई) देखो भादर पिरधी नै। या हिम्मत है या नागाई ?

नागाई नै ई तो हिम्मत कैवे है।

- रावतः । का प्राप्तं बैद कर्ष है । इससी निज्यं में जो बूंकर में आमें से मरीसे राजकी, निज में निज्यों बरमा कर मुसारामाझा बुधा मूं बीस पड़ी प्राप्ति सामग्र हिस्सा सुकार है।
 - रेग् (हर्णर) धो हा--चे धार्त हिस्सत मातो हो--- अतो सबूर बादमी राज्यस्य है।
- स्वतः सामार्थसम्बद्धाः सम्बद्धाः स्वाहतः
- रेंगुं पार नो कही कोसी काम करें उस में किमान नी दीसे, पण जकी पर है मूं किन काम करें घर केंग्रेज मू काम करें, मो हिम्मतमाओ सानी है। घर देगरती कोई साब से ग्रेंड हिम्मतपाओं कोनी काई ?
- भागः हा, धवर्षे को इन मी बान करी।

 [गुप्त प्रदेग भानका मार्थे। भाग प्रवर्ग रोक्स बार्ग्य केवे पण रण् हर्नाष्ट्र कारों भाग पार्थे। भाग भर्मा बार्ग्य केवे
- गायतः वसंदेशी ना टिम्मन ।
 - मागुः हिम्मत तो कटैपण हिम्मत री बात जरूर मुणी !
- सादतः नो दानग्रहास ह्यो कोनी ?
- माग्: (मञाकमे) दोतण काई ब्रव तो कलेवो भी हुयन्थी।
- गायतः पण भावाताराक्लेबामू पेट भरैकोनी ।
 - मागृः बापर्गतो बर्दपानी बासी ।
 - गोंवत: पती नै तो भाषा कृण सा द्वाना माराहा।
 - मागृः शावा तो ईंगाय से रोज पड़े है। जकै रो दिन साबळ हुवै वो सुख मृंदिन बाटै, नीतर फटें बुण पर विस्वास ? कटै भी चल्यो जायो, हाय माझ्या घर जेव सामी करवा लोग बैठवा है।
- राष माइया घर जब शामा करना शाग बढ़शाह । सावन : स्ट्रैतो घैबाना मुणेर ताजुब हुवेंक घैटी घाजादी किण काम री । देस नै देस अर घाषघाळें नै घाषघाळों नी माने तो खाली पेट घरणूं मिनक्सपणें नी कहीं जाय ।
 - मांगू: ये मिनवपर्ण री मोबो हो झर बाज समद्धा कगत आपरै सुवारय री सोवै। देस है करें ? लोग मुंडो फाड्या उभा है।
- सोंबत : और का है तो माची पण म्हें लोग वै दिन देख्या है. जट ग्रंथ जा रो

म्राजादी ने लेय'र मीठी कलपनावा जागती। सोचता कई म्रापल् देस भी ब्राजाद होसी काई ? घर आजाद होसी तो गांव रो काई नक्सो होसी, पण भाज लागें के भाजादी योडासा'क लोगां नै मिळी है बाकी तो आलो देस स्नाजाद होय'र भी गुलाम है। मांग : जरूरतम्राळा नै म्राजादी कद मिली ? म्राज भी गांव में की लोगपूर गांव नै भ्रापरी मुद्री में बंद रालएा चावै।

सांवत : पण ग्रा मनगत कद वदळसी ?

मांगु: बदळसी क्यूं? बदल्यालीम खार्चकाई? ग्राज चाये कोई गांवमें रैंबै या जाये कोई जिम्मैदार पद नै संभाळतो हवै सगळा रो ध्यान भापरै वैक वैलेन्स झर भापरी सुविधा मे है और आ। सुविधा जद ई मिळ सकै जद ग्रापां की रा वाजिव हकां नै मारां ग्रर खुदरी हैसियत नै, ईं रूप में परगट करां'क सामलो नाक रगड़बालग ज्यावै ।

सांवत : (बात ने गैराई सूं मैसूस करतो) ब्रा बात तो मानणजोग है। हक री लडाई ग्रंग्रेजां सूंही। हक मिलग्यों तो उण रै माफिक काम करणूं चाये । नाक रगड़रम् तो पर्छ झाजादी रो उल्टो हुयो ।

मांगू: भाज तो सा, नाक नै रगड़ए। भर मोकासारू कटावएां भी जरूरी है। नाक रा घणी ब्रापरी भूपडी में रेवो, जे थाने की काम करावणू है तो ढंग सूंनाक रगड़वों सीखो-लम्बो लम्बो रगड़ए। ग्रर जर्गाः जगां रगड्गाः। सांवत : जणां तो भ्राजादी मिली, पण नाक कटम्यो ।

मांगु: म्हारै विचार मूंतो भ्रो सोचलाूं ठीक है। सांवत : (योड़ी मजाक करतां थकां) हां स्रो नाक ई तो फगड़ी री जड़ है।

मांगु: त्राजभी है।

सांवत : दुनियां रा सगळा युद्ध ई नाक नै लेय'र हुया।

मांगु:

म्हारै खयाल सूंतो आज भी समळी लड़ाई नाक री है। ग्रं केम-मुक्दमा घर ताव तोरा नाक रै वास्तै हैं।

सांवत : हों, टौग कट्योड़ी चल सके हैं पण नाक कट्यां सोवयूं कट ज्यावें।



चोथो दरमाव

ुआमली रो गट्टो । दगत दोकारां । तासपत्ती री बैठकवाजी । विरजू घर दुरगो कंकार अर निजाम साथी । टुबन्टो एट रो सेल, च्यारवां रै ओळी-दोळी मन्नो लाती, दयावजी, रामसिंह, रामू घर फावर बैठ्यां है। की छोटा टावर र्र भावतो वरी च्यान तासपत्ती में लगा राज्यों

मांगू, मदन अर गिरवर भी घा ज्यावें । योड़ी ताळ घावस मे वतनार्व पर्छ पिरधी भी घाज्यावें । योड़ी चुस्की लगाया । पिरधी भी वां री वाता में घ्यान स्व स्वे । यह गिरवर केंबें स्वो मड ज्याय घोक बाजी । राष्ट्र में केंबर मांगू चरा है तास मगावें अर पर्छ चाक जणा बोरी बिछा' बेठ ज्यावें । पिरधी टुबन्टी एट रें स्वी छोटण लागें । रिरधी अर गिरवर, मदन अर मांगू आर्म-सामें बैठ'र सीरं क्यों । केई दूजा छोरा ई जणां कर्ने आय'र बैठ ज्यावें ।

पिरथी: (हाय में पत्ती लेग'र) बोलो सरत कांई?

मौगु: सरत?

पिरथी: हार-जीत री सरत तय करल्यो ।

र्मांगू: करल्यो।

पिरथी : करो-ग्रापां तो सरत सूं खेलण-ग्राळा हां।

मदन: तो सरत बतावो ?

पिरथी: सरत आपएँ तो बोतळ री है।

माँगू: बोतल पीसी कुण?

पिरथी: मिल्यां तो कोई छोड़ कीनी, इंया सै ई गांव में घरमात्ता है कमी नी।

मदन : तो ठीक है बोतल झठेरी झठे मंगाणी पड़ैंगी कद पूछ दबार ^{हरें} हट ज्याची।

हट ज्यावो ।

पिरथी: मरें जा गैली। कई हठ्या हो कोई? (हाय जेव रे मांस शत^{र र} रो नोट सगळा रें साम पटकतो हुयो) त्यो मगाऊ जमा कर^{द्यी व} रें विस्वास नी हवें तो।

गिरवर : म्रो बिल्कुस टीक है। (मदन कानी देख'र) भ्रव दस री पर्ती दे^क काढी बाबूजी। मदन : (जेब मांय मूंदम री नोट काड़तो हुयो) त्यो सा दगरी पत्ती। (सगळा हंसै)

पिरथी: झब झामी मजो। सरत विनातान क्षेत्रण्ं टाइमपान करग्ंहै। मांगु:

तो यार भाषां नै टाइम ई तो वाम करण है।

पिरथी: ना। भ्रापांटाइमपान भ्राठा खिलाडी कोनी। टाइम है की टैक्टनै।

मांगु: म्हमा, अँतो मरकारी नौकर है---विजी है विजी। पिरथी : सरकारी नौकर किया कोनी। रोडवेज चालक हा घर तैसीलदार जती तनला पावा हा। (पिरधी साम पीम'र च्यार-च्यार पत्ती बाटएां सुरू कर देवें)

मांगृ: म्ह भाई, भो तो ई देस रो हाल है। ड्राइवर तैमीलदार री जनगा लेएं चार्व घर तैसीलदार कलेक्टर री ननन्ता लएं चार्व। (सगदा भाप भाप री पत्ती देखका लाग ज्यावे)

पिरधी: सनलानी उठाया घैदम री पत्ती धार्व कटा गूरे

मागुः भावै जवी तो म्हनै ठाहै।

मदन: अपरी कमाई है।

गेरवर: ग्राज कमाई ईरो मतलब, ऊपर री क्माई सूटै। तनकाता रोटी कपडा ताई है। बाबी बचन है ऊपर री कमाई मुं।

पिरथी: अरै ऊपर री नमाई है जणाई बाबा रै बाजू पान्या है नीतर भालों कोई दमरों।

भदन : संर, छोडो या बाता नै। यब बोलो ।

गिरवर : मोळा।

मदन: बीस।

गिरवर: छोड्या।

पिरथी: इस्बन।

गरवर: भिडताई।

पिरथी: धौर पर्छ बाई? बापा ने तो तीह नेती है बर दन रीपणे खाणों है।

मदन : म्ह भाई रोडवेज चलावै है झर डाका मारै है। पिरथी: (हल्को गुस्मो दिखायतो) जा मृदली, तन्नै कोई ठा। डाका प्रान

सगळै पडै है। कुण सो दपतर घर कुण सो ग्रफसर-डाका सूंदूर हैं। छोड़ो डाका अर मारो फाका। (हैंसण लागै)

मांगु: जणाभाई धानै तो आदत है।

पिरथी: म्हं थानै भी सोक्यू सिखा देस्यूं। गिरवर : स्यो, ग्रव भ्रावो नीचा नै (हुकम रो गुलाम चालै)

पिरथी : हैं।

ø

गिरवर : वयुं? पिरथी:

(हंस'र) ठीक है दुयो दारी का कै।

मांग : देख बोलेगी नी।

पिरथी: ई'मे कांई बोल दियो ?

मदन : वस रैवण दे—इसारावाजी नी चलैली क्यू'क सरत है। पिरथी : (हंम'र आपरी पत्यां कानी देखे) द्यो हो सरत है जणाई तो

इसारावाजी जरूर है (थोडी ग्राल टमकार देवे)

मदन : जणां ई तो तेरै साथ कोई खेलै कोनी। पिरथी: क्यू ?

मांगू: तूयार सौ बेइमानां रो श्रेक बेईमान है।

पिरथी : वेईमान सगळै है। म्है ब्रुगला भगतां नै चोखी तरिया जास् हूँ।

(मदन मागु घर पिरथी ग्राप-ग्राप री पत्ती नाख देवें)

पिरथी : तो सात भ्राया । (हत्यो उठा लेवै)

मांग : देख, पोइन्ट गिर्एंगो नी ।

पिरथीं : क्युं।

मदन: मनमें गिणी।

पिरथी: ठीक है। स्रांने म्हें जाएं हूँ — अँतो रूंगस खाणा है।

मांग् तेरैं सूंभी घणा काई।

मदने : रूं गस विनापार कोनी पड़ै।

पिरथी: रू गस मूर्दि काम चाल है दुनियाँ रो । ईमानदार तौ बापड़ा मैहदी

बण्या बणी में बैठ्या है। मांग :

टेम-टेम भी बात है।

पिरथीं : टेम ग्राई चोसी है—करले सो काम वाकी सव......। मेंदन : ससमापा वारी तीत ।

पिरसी : भीत तो स्टारी क्यु — दनिया से सममो स्टै तो दुनिया देख'र सीत यदली है।

रेस्टर : स्प्रों मार्जाबार । ये लो दती बातां प्रणी करो । सिन्धी: धोई तो मजो है।

सद्भ : सत्रो तो दस री चली से है।

पिन्धी : गामी कड़ी (हम'र) छरै या अजंत ने किया चिडी री झाल दीसी ही विया है अहमें सी भाषा दस भी पत्ती दीसे हैं।

मदन: इम री पनी क्यां ने स्थाबा दे हैं।

माग : हा, घालो ।

^{गिरवर}ः हमे घो पान से गुतान।

पिरथी: वह! भड़ेडा। जणातो घारी मुस्टस्ट्रेकाढ देस्यू।

मार्गः मुरद तो महें काइम्या घर दन री वनी लेखा। (सगळ हनण लागे) मदन : ग्रो है रग (हाथ भी पत्या मूरग दिखाई) ग्रर दक्की मूकाट

ले वे । मांग्: धरछोटी मूं बाट्यो ।

मदन : धोडा ठैरो ।

मदन: हा, रग भी तेरो है।

पिरथी : कर दीनी नारबदळ । ग्रय थे बयूंबोलो । पण मोको नोई कोनी चुकै। चुकै सो मुख्य - सायर कैया।

माग : चारै कान में कैयग्या काई?

पिरथी: कान में क्यूं। बै तो डूंगर मार्थ लड्या होय'र बोल्या है। ग्रम कोई

नी मुर्ण तो बांने काई दोस। धीस करमा है।

गिरवर : भागृ: बिल्क्ल ठीक। कलजुगम तो वरमानै ई दोस है। घोलो वरेसो प्रसाव ग्रंग करें मों मोज उहावें।

गिरवर : ग्राईहै।

पिरथी: होगी रेगैलो।

मांगु: भाई बाज है तो आई।

पिरथी : जणा नयू भलाई में टाट बुटाई ? चानै पुण सी भगवानदान बाबो

करुप्ता हो । (विक्षा हत्यो पुराय'र मोरी मान बदाक' यहा मैं मीने भर गोहरहा में मन में नियांत हुन्ये में मायरे गामें रुप लेवे । Trift भाइटा बागत बर्ग तो है, ते तीतारी संगाम भी नाले तो करदे fann i गिरगर भी, घाःयो (गुनाम मार्ग) वी गो भैगो भी यो में अर की घोरा

fier ier i पिरधी . (खुन होय'र) धरे वा मेरा गांधी । चार कडे है ? (इमारो करें) माग भोर तो प्रारे गामा बेटमा है ? (हमण सामै)

विश्यो . मरे जा मुगळ १ मागुः शेष्टवत्र मेत् कोरी कोनी करे काई?

पिरची : बोरी? मदन : चोरी रै... मोरी में चोरी (हमें) मौगु: हा (हमशासारी)

पिरसी : धरै वा घोरी कोती, वी तै महे कमाई माना ।

मांगु: हा, सब तो नाव गैयदळग्या। सूर्र कामा नै घोगा नाव दे दिया पण गाय मै....(इमारी वरे)

गिरथी : (मजाक करतो) माय नै सगळा बरोबर है ऊपर मूं सगळा र म्यारा-न्यारा माग है कोई साकी पैरे कोई पेन्ट-युसर्ट पेरे तो की सादी की ।

मदन: तुचाल मार।

पिरथी: पानां हां, ईयां त् घांपळ मत कर।

मदन : धायळ तो ची इ है। पिरथी: पकड़ो।

मांगु: पकड़ी बुख २ पिरथी: आाभी साची। म्हारै तो रोडवेज में पताइ गहुवै।

मांगु: पलाइ'ग नै कृण पकडै ?

पिरथी : इंया पकड्या पछै काम किया चालै।

मांगू: घर यार घो काम चालएं काई है। हरेक जर्ण माई कैंव-काम

नी वाली। तो कांई बेईमानी सू'ई काम चाली। पिरथी: वेईमानी सूं आराम मूं चालै।

```
मेंदन : ग्रुभाई। वत्तो धाराम मुंबोल्यो है जिया वेईमानी तो रोटीरे
           साय रहती ।
निर्म्यो : धव समझ्यो स्हारलो पोइस्ट ।
  मांग : पोइन्ट नो गगळा ममझ राज्या हो।
पिरथी: ग्रहेपद्यानाई हुवै, गुण्यो कोनी।
  मागु: नृगुण शब्दो हैना।
पिरयो : स्टैनोहाही।
 मदन: नहीं, घठ और भी केई हैं।
 पिरयी: (सममनो हुयो) म्हनै बामे क्यूं गिएएँ?
  मागू: गिर्गेषुण ? दुनिया केंबे है।
निस्यी : इनिया बावळी है।
 मांग्: जद ई थां जैडा रा दाव लागराख्या है।
गिरवर : दनियां बावळी कोनी स्याणी है।
 मांगू : स्वाणी है, जणा मापरा टावर पळ है नीतर मठ गोळमदारा री कभी
          हैं बाई? भरयोड़ी बन्दक लिया डोलै है।
 मदन : (पिरथी कानी देख'र टेड मूं) तुकूण सूंकम है।
पिरयों : ( थोडो सावधान होय'र ) ग्रव देख ग्रपोपड़ तो करें मना । तेरी
          सारी चाल म्हे जाएं हैं। तू दुनियां नै उल्लू बणावे पण, म्हें
          बएं बोनी।
 मदन : विणन उल्लूबणायो, बता ? (पट्टी सामर'र पूछण लागै)
पिरथी : छोड़ ! ग्राबार पोल स्रोलस्यूंतो मुंडो बड़कृत्या सो हो ज्यासी।
          ( मदन रे चेरै पर थोडो गस्सो )
गिरवर: ग्ररै भाषा थे लडो हो या खेलो हो ?
 मांगू: जुवामें तो लड़ाई होसी।
पिरथी: जुग्रो कुण संलै?
 मांगू: ग्रोज्ओ ई है—दसरी पत्ती मूं ग्रापां सेल रैया हां। पर्छ जुओ
          काई हवे है ?
पिरथी : (पिरथी नै गस्सो आर्व घर वो नीचे ई आपरी पत्ती नांस देवें)
          होडो जणां, बारै जिस्या रै साय खेलणुं, माटी हिनाणु है।
 सांगु:
          ल्यो आ जबरदस्ती।
```

मदन : हार दिख्याई ना । ओ सदा रोळी करैं ।

पिरथी : (गर्स में) महे ईमानदारी रो देको तो थे ई ले रायो है।

मांगू: छोड़ो, ब्रायगी मीट (ब्रापर हाय मूं पत्ती नाख देव, पर्छ मदन धर गिरवर भी पत्नी नाख देवे । पिरधी फटाफ्ट पत्यां ने सामट रे.वे)

पिरथी : दुनियां मटी घणी होसियार होगी।

मांग: कृण सी दुनियां?

मदन : थारा जँडा लोगां री। पिरथी : म्हें कोई दुनियां मूं ग्रलग हां।

मांग : ग्रलगतो हो ई। धारो ग्रलग पंथ, ग्रलग ढंगढाळी ग्रंर ग्रन

कारनामा । देख म्हनै आर्य है गुस्सो । फुंठी बात महै तो ब्राज ताई वरी न विश्यी:

धरनाकदै सुर्गा। मदन: (व्यंग में) म्ह?

मांगू: म्हजी, थे तो मनवारी पुरुमा रा अवनार हो। ग्रा धरती वारी कारण ई टिकरी है नीतर ग्राज ताई' लोग हो ज्यानी ।

यारी ! बड़ा उस्ताद हो । महें इस्यो काई विगाड़ दियों जाने नेवर्ग पिरथी:

लाभ्या जद सूं म्हनै भांड रैया हो। मदन : विगाडयां, डागग्राळा योटी मराया ।

पिरथी : म्हनै भाषा त आज बिल्ली ग्राडी लेय'र ग्रायो है।

म्हैं तो बाज ही बाडी लेव'र बायो हूँ—पण तुमदा बाडी नेव'र मदन :

सारती ।

मांग : ईंगाव मे तो घणा जणा विल्ली ब्राडी लेव'र धानै।

मदन : वै वां रै मूण है-इरावो, धमकावो, बोर दिमावो, उप्तू बहारे, सोगा नै भिडावों झर मौज उडावो ।

बाह भाई, गांव घर गांव रा गोळमदारो । पीवो, सार्वा घर मीव मांग्: उद्यावी ।

पिरथी: ये की ई कैबो—यारा का घोडा नो इंग्रांई मैदान मे दौहगी।

मदन : दीहरैया है।

मांग : जमा दें महे बैच रैया हा, भूछी थोड़ी बैबा हा । रेवर : (ऊठ'र) त्यो उठो नीतर ग्रर्टम्ड पृटनी । ग्रोर्इगाव रो पारा है। स्थार जणा बैटो घर पर्छ सड'र उठो। (स्थार उठ न्याई घर भांकड नोडबा लागै)

मॉगू: जैहो जमानारी।

मांगु: जैहो भादर्गिगा री 1

मदन : जैहो दीक्डीमगारी। (ध्यामें हंगता हुवा चल्या अर्थ)

मदन : जैहो गोळमदारां गी।

(धीमै-घीमै घन्यकार)



